Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

दुगुणं करेइ से पावं,
पूयणकामो विसण्णेसी।

जो पूजा का इच्छुक और असंयम का आकांक्षी होता है, वह दूना पाप करता है ।

• नई दिल्ली • वर्ष 24 • अंक 6 • 14 - 20 नवंबर, 2022 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 12-11-2022 • पेज : 16 • ₹ 10

जीवन में निष्ठुरता की वृत्ति से बचने का करें प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, ५ नवंबर, २०२२

ध्यान साधक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र में प्रश्न किया है कि भंते! जीवों के सात वेदनीय कर्म का बंध किस कारण होता है? उत्तर दिया कि गौतम! प्राणों की अनुकंपा, भूतों की अनुकंपा, जीवों और सत्त्वों की अनुकंपा, अनेक प्राण, भूत जीव, सत्त्वों को दुखी न बनाना, शोकाकुल न बनाना, न चुराना, शरीर को क्षीण या खेद भिन्न न बनाना, न रुलाना, न पीटना, न प्रताप देना। इस प्रकार की अनुकंपा वृत्ति से जीवों के सात वेदनीय कर्मों का बंध होता है।

आगे प्रश्न किया कि भंते! जीवों के असातवेदनीय कर्म का बंध किस कारण से होता है, तो सात कर्म के विपरीत रूप में जान लें। जैन दर्शन में कर्मवाद का सिद्धांत है। उसके अंतर्गत आठ कर्म प्रकृतियाँ बताई गई हैं। इनमें है एक वेदनीय कर्म। इसके प्रकार होते हैं–सात वेदनीय और असातवेदनीय।

सात वेदनीय सुख देने वाला होता है, तो असातवेदनीय दुःख देने वाला। फल जब ही मिलेगा जब कर्म का बंध होगा। अनुकंपा वृत्ति से सात वेदनीय का व

अनुकंपा की निष्ठुरता से असातवेदनीय का बंध होता है। कर्म को दया नहीं आती है। बंधा है, तो फल भोगना ही पड़ेगा।

अनुकंपा के दो रूप होते हैं–विधेयात्मक और निषेधात्मक। विधेयात्मक यानी कुछ करना होता है। निषेधात्मक में कुछ करना नहीं होता है। हम निष्ठुरता की वृत्ति से बचने का प्रयास करें। मन में अनुकंपा रखें। संत का हृदय तो दूसरे को दुखी देखकर द्रवित हो जाता है।

तीन विकलेंद्रिय प्राण कहलाते हैं, वनस्पतिकायिक जीव भूत, पंचेंद्रिय जीव शेष चार स्थावर सत्त्व कहलाते हैं। छापर चातुर्मास में मैंने भगवती सूत्र को अपने मुख्य प्रवचनों का आधार बनाया। ये आर्षवाणी है। आज इसका वाचन संपन्न कर रहा हूँ। इस आगम वाणी का वाचन करते-करते मेरी जिह्वा भी धन्यता को प्राप्त हो गई है।

पूज्यप्रवर ने कालू यशोविलास का भी वाचन करवाया। इस चातुर्मास में मैंने कालू यशोविलास को उपरले व्याख्यान के रूप में व्याख्या करने का प्रयास किया है। यह जन्म स्थान की बात है, यहाँ अंतिम बात नहीं बताई है।

छापर में विदेशी लोगों का इंटरनेशनल प्रेक्षाध्यान शिविर लगा हुआ है। आज इसका समापन हो रहा है। अरविंद संचेती ने प्रेक्षा इंटरनेशनल के बारे में बताया। विदेशी लोगों ने अपने ध्यान के अनुभव बताए। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

जिसमें महान प्रज्ञ विकसित हो गई हो वो व्यक्ति महाप्रज्ञ हो सकता है : आचार्यश्री महाश्रमण

चाड़वास, ६ नवंबर, २०२२

परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने चाड़वासियों पर विशेष कृपा बरसाते हुए दिवस प्रवास हेतु छापर से चाड़वास पधारे। छापर चातुर्मास में पूज्यप्रवर ने एक दिन फरमाया था कि चातुर्मास के अंतर्गत एक दिन चाड़वास परसने का भाव है।

महान व्यक्तित्व के धनी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारे लिए प्रज्ञा का बहुत महत्त्व है। परम आचार्य भिक्षु हमारे धर्मसंघ के प्रथम आचार्य-गुरु हुए हैं। हम उनके जीवन पर ध्यान दें तो ऐसा लगता है कि उनमें प्रज्ञा या प्रतिभा का अच्छा प्राकट्य था। वे कैसे अपनी बात को प्रस्तुत कर देते थे। यह उनके जीवन के एक प्रसंग से समझाया।

आज शुक्ला त्रयोदशी है। आचार्य भिक्षु का जन्म और महाप्रयाण भी शुक्ला त्रयोदशी को ही हुआ था। उनकी आचार्य परंपरा आगे बढ़ी। उनमें आठवें आचार्यश्री कालूगणी हुए जो छापर से संबंधित हैं। छापर में चातुर्मास का क्रम चल रहा है, बीच में हमारा चाड़वास भी आना हुआ है।

कालूगणी द्वारा दीक्षित आचार्यश्री तुलसी के अनंतर पट्टधर आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी हुए हैं। आचार्य तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी लंबे समय तक दोनों साथ-साथ रहे हुए हैं, जो विशेष बात है। मुनि नथमलजी एक मानीजते दार्शनिक संत थे। आचार्यश्री तुलसी ने आज ही के दिन गंगाशहर में मुनि नथमल जी को महाप्रज्ञ अलंकरण से अलंकृत किया था। जो गरिमापूर्ण अलंकरण है।

जिसमें महान प्रज्ञा विकसित हो गई हो, वो व्यक्ति महाप्रज्ञ हो सकता है। अलंकरण जैसा व्यक्तित्व हो तो अलंकरण की सार्थकता हो सकती है।

राजलदेसर में २०३५ के मर्यादा महोत्सव के समय मुनि नथमल जी टमकोर को गुरुदेव तुलसी ने अपना उत्तराधिकारी बनाया था और नाम बदलकर युवाचार्य महाप्रज्ञ कर दिया था। कई वर्षों तक आचार्य-युवाचार्य साथ-साथ रहे, फिर गणाधिपति व आचार्य साथ-साथ रहे थे।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का एक ही मर्यादा महोत्सव गणाधिपति तुलसी से अलग चाड़वास में हुआ था। मैं उस समय उनके साथ ही यहाँ था। आज दिवस प्रवास के लिए यहाँ आना हुआ है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का महाप्रज्ञ अलंकरण दिवस जीवन-विज्ञान दिवस के रूप में घोषित है।

जीवन-विज्ञान शिक्षण जगत के लिए बहुत उपयोगी है। विद्यार्थियों का ज्ञानात्मकता के साथ भीतरी भावनात्मक विकास हो। नैतिकता का भी विकास हो। साथ में आध्यात्मिकता का भी विकास हो। शारीरिक और बौद्धिक विकास भी आवश्यक है। पर साथ में मानसिक और भावनात्मक विकास भी विद्यार्थी में हो। ऐसा प्रयास होना चाहिए।

जीवन-विज्ञान ऐसा प्रयास है, इससे विकास हो सकता है। महाप्राण ध्वनि उनमें से एक है। महाप्राण

ध्वनि का सभी को प्रयोग करवाया। आई क्यू के साथ ई क्यू का भी विकास हो। चाड़वास में खूब धार्मिक विकास हो।

'चाड़वास तेरापंथ के आइने में' पुस्तक चाड़वासवासियों द्वारा पूज्यप्रवर को लोकार्पण हेतु अर्पित की गई। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया कि चाड़वास के मुनि सोहनलाल जी से तत्त्वज्ञान सीखने का मैंने प्रयास किया था। उनके पास भी कुछ समय साथ रहा था। तपस्या के प्रत्याख्यान पूज्यप्रवर ने करवाए।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि चाड़वास में प्रवेश करते हुए ही अनेक घटनाएँ स्मृति में आ गई हैं। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के पास गुरु का आशीर्वाद था। महाप्रज्ञ अलंकरण उनके विकास का प्रथम अलंकरण था। उनमें उत्तरोत्तर विनय भाव-गहराई बढ़ती गई। गुरुदेव तुलसी ने उन्हें अपना उत्तराधिकार सौंप दिया। अनेक कार्य उन्होंने गुरुदेव तुलसी के सान्निध्य में पूर्ण किए थे। गुरु की दृष्टि अनुसार वे कार्य करते रहे।

(शेष पृष्ठ २ पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
14 - 20 नवंबर, 2022

✦ *इंद्रियाँ अपने आप में अशुभ नहीं होतीं। किंतु जब उनके साथ मोह का योग हो जाता है तो ये कर्मबंधन का कारण बन जाती हैं।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

कर्कश वेदनीय कर्म से बचने के लिए 18 पापों से रहें दूर : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, ४ नवंबर, २०२२

तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमण जी ने आगम वाणी का रसास्वाद कराते हुए फरमाया कि यहाँ भगवती सूत्र में दो शब्द प्रयुक्त किए गए हैं। एक है—कर्कश वेदनीय। दूसरा शब्द है—अकर्कश अवेदनीय। कर्कश वेदनीय कर्म जो कष्ट-दुःख से भोगा जाता है। अकर्कश अवेदनीय कर्म तो केवल साधु के ही होते हैं।

कर्कश कर्म तो व्यापक है। नारकीय जीव, वैमानिक देवों के तिर्यंच और मनुष्य सभी के होता है। कर्कश वेदनीय कर्म बंधने का कारण प्राणातिपात, मृषावाद आदि पाप के अठारह प्रकार हैं। प्राणी के जितने खराब परिणाम होते हैं, उनसे बंधन होता है। कर्कश वेदनीय कर्म अनेक रोग रूपों में दयनीय स्थिति में भोगा जाता है। हम ऐसी सावधानी रखें कि ऐसे कर्म बंधें ही नहीं।

साधु के तो अठारह पापों का त्याग होता है। अकर्कश वेदनीय का बंध इन अठारह पापों का विरमण करता है, तब होता है। पंचेंद्रिय बंध नरक बंध का

कारण है। हम अहिंसा की शैली से जीवन जीएँ। मृषावाद भी कर्कश वेदनीय कर्म बंध कराता है। इसी तरह अदतादान आदि पापों से कर्कश वेदनीय कर्म का बंधन होता है। इनके बंधन को विस्तार से समझाया।

गृहस्थ ध्यान रखें कि कर्कश वेदनीय कर्म का भारी बंध न हो जाए। आचार्यश्री महाप्रज्ञ की एक कृति 'कर्मवाद' जो अंग्रेजी भाषा में Docbin of Karma, जिसका ट्रांसलेशन समणी रोहिणीप्रज्ञा जी ने किया है। जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित यह ग्रंथ पूज्यप्रवर के करकमलों में लोकार्पित किया गया। पूज्यप्रवर ने इस पुस्तक के बारे में अपने भाव उद्घाटित किए कि तत्त्व ज्ञान को जानने वालों के लिए यह उपयोगी हो सकता है। अनुवाद करने वाला भी पहले ग्रंथ की गहराई से जानकारी करे तो विषय का प्रतिपादन वास्तविक हो सकता है। दोनों भाषाओं का भी ज्ञान होना चाहिए। समणी रोहिणीप्रज्ञा जी ने अच्छा काम किया लगता है।

समणी रोहिणीप्रज्ञा जी ने इस पुस्तक के बारे में अपने भाव-अनुभव बताए। शासन गौरव मुनि राकेश कुमारजी का जीवन-वृत्त 'प्रतिभा और पुरुषार्थ के संगम मुनि राकेश कुमार जी', मुनि दीपकुमार जी ने लिखी है। जैन विश्व भारती द्वारा पूज्यप्रवर के करकमलों में लोकार्पित की गई। पूज्यप्रवर ने इस पुस्तक के बारे में आशीर्वचन फरमाया। मुनिश्री अणुव्रत प्राध्यापक थे। सुदूर क्षेत्रों की यात्राएँ भी की थीं। मुनि दीपकुमार जी भी उनके सिंघाड़े में रहे हुए हैं। मुनि दीपकुमार जी भी अच्छा कार्य करते रहें।

व्यवस्था समिति के अध्यक्ष माणकचंद नाहटा ने चातुर्मास में आर्थिक अनुदान दान-दाताओं के नाम की घोषणा की।

अणुव्रतों को धारण कर जीवन को बनाएँ सुफल : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, ३ नवंबर, २०२२

धर्मसंघ के नायक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र में प्रश्न किया गया कि जीव का जो आयुष्य बंध होता है, वह ज्ञात अवस्था में होता है या अज्ञात अवस्था में होता है। यह नियम है कि प्राणी अगले जन्म में जाता है, तो वर्तमान जन्म में अगले आयुष्य का बंध करके ही मरेगा। जैसे रेल या वायुयान से यात्रा करनी हो तो गृहस्थ को पहले टिकट बनानी पड़ती है।

जीव अगले भव में कहाँ जाएगा उसका निर्णय वर्तमान भव में ही होता है। अगले जन्म का आयुष्य बंध ज्ञात अवस्था में नहीं होता। वह अज्ञात अवस्था में ही होता है। वर्तमान आयुष्य के तीसरे भाग, नौवें भाग या सत्ताइसवें भाग में होता है। जागरूकता यह रहे कि जीवन अच्छा रहे।

कर्म अच्छे-बुरे जो भी किए हैं, उनका फल भोगना होता है। जीवन का भरोसा है नहीं, क्या पता कब जीवन पूरा हो जाए। जीवन जब तक है, आदमी अपना अच्छा काम कर ले। धर्म-ध्यान करे। स्थिति अनुसार समय का नियोजन करे। पापों से बचने का प्रयास करे। जीवन में ईमानदारी, नैतिकता और नशामुक्ति रहे। धर्म के दो प्रकार काल प्रबद्ध और कालातीत हो जाते हैं।

जीवन की शैली के साथ अणुव्रत भी जुड़ जाए। भाव क्रिया, प्रतिक्रिया विरति, मैत्री, मिताहार और मितभावना का प्रयोग जीवन में हो। इसमें समय लगाने की जरूरत नहीं। जीवन व्यवहार में पाँचों बातें जुड़ जाती हैं। जीवन की समाप्ति का भी पक्का पता चलना मुश्किल है। आयुष्य कभी भी पूरा हो सकता है।

मृत्यु का पता न होना भी अच्छी बात है। आदमी को मौत-बीमारी का डर न रहे। मन में शांति रहनी चाहिए। धर्म-अध्यात्म की साधना करते रहें।

पूज्यप्रवर की सन्निधि में जैविभा द्वारा प्रकाशित एक ग्रंथ 'प्रवचन सारोद्धार' का लोकार्पण हुआ। पूज्यप्रवर के दिशा-निर्देशन में यह ग्रंथ समणी कुसुमप्रज्ञा जी द्वारा संपादित है। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया। हमारे यहाँ पर आगमेत्तर साहित्य पर भी काम होता है, हुआ है। गुरुदेव तुलसी की तो छत्रछाया और कुछ-कुछ परिश्रम भी इसमें रहा है।

परमपूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के आगम कार्य के रीढ़ के रूप में रहे हैं। चारित्रात्माओं का भी सहयोग रहा है। समणी कुसुमप्रज्ञा जी पुराने ग्रंथों के संपादन से जुड़ी हैं। अनेक ग्रंथ इनके द्वारा संपादित होकर सामने आए हैं। आगे भी ये प्राच्य ग्रंथ का संपादन करती रहे। इससे स्वाध्याय भी हो जाता है। इनमें शुक्ल लेश्या के भावों का विकास होता रहे।

समणी कुसुमप्रज्ञा जी ने इस ग्रंथ के विषय में जानकारी दी। व्यवस्था समिति के अध्यक्ष माणकचंद नाहटा ने भूमिदाताओं व व्यवस्था सहयोगियों के नाम की घोषणा की। व्यवस्था समिति द्वारा उनका सम्मान किया गया।

जिसमें महान प्रज्ञ विकसित...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि महापुरुष में साधना की गहराई, आदर्शों की ऊँचाई और परोपकार की भावना रहती है। उनका जीवन निरंतर गतिमान रहता था। ऐसे महापुरुषों में एक है—युगप्रधान महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी। चाड़वास में गुरुदेव का चौथी बार पधारना हुआ है।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में स्थानीय सभाध्यक्ष बाबूलाल बच्छावत, जुगराज, सरपंच प्रतिनिधि रामदेव गोदारा, महिला मंडल, कन्या मंडल, मोनिका चोरड़िया, कुसमदेवी लुणिया, छत्रसिंह बच्छावत (कवि), विकास मंच, चाड़वास के अध्यक्ष सुरेंद्र चोरड़िया ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

आचार्यश्री तुलसी के १०९वें जन्मोत्सव के आयोजन

नैतिक क्रांति के सूत्रधार थे आचार्यश्री तुलसी

रोहिणी, दिल्ली

तेरापंथ भवन, रोहिणी में साध्वी डॉ० कुंदनरेखा जी के सान्निध्य में आचार्यश्री तुलसी के १०९वें जन्म दिन पर कहा कि आचार्यश्री तुलसी प्रकाश पुरुष थे, जिन्होंने स्वयं ज्ञान का प्रकाश का उपलब्ध किया और दुनिया को अनैतिकता और भ्रष्टाचार के अंधेरे से निकालकर नैतिकता का प्रकाश अणुव्रत के जरिए घर-घर तक पहुँचाया।

तेरापंथ धर्मसंघ में मर्यादा और अनुशासन को सुदृढ़ बनाकर साधकों में संयम का संचार किया, जिससे अध्यात्म की शक्ति को वर्द्धमान होने का मौका मिला।

साध्वी कल्याणयशा जी ने कहा कि आचार्य तुलसी मानव नहीं महामानव थे, जिन्होंने स्वर्ग को धरती पर उतारने के लिए बल्कि धरती को स्वर्ग बनाने के लिए अथक श्रम किया। पद का विसर्जन करने वाले इस युग के अप्रतिम आचार्य थे गणाधिपति गुरुदेव तुलसी।

पवन जैन, अशोक, बिरदीचंद जैन, रतनलाल जैन, कमल बैंगाणी ने अपने भाव व्यक्त किए। राजूबाई राखेचा ने मंगलाचरण किया। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष विजय जैन ने अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति दी।

घाटकोपर

साध्वी संयमलता जी के सान्निध्य में आचार्यश्री तुलसी का १०९वाँ जन्म दिवस मनाया गया। बाल कलाकार भव्य कावड़िया ने सुमधुर स्वरों से मंगलाचरण किया। मुख्य वक्ता दिलीप सरावगी ने बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी आचार्यश्री तुलसी को ग्लोबल मेन बताते हुए पाँच सूत्रों की विस्तृत चर्चा की।

आचार्य तुलसी करुणा हैं, अजस्र स्त्रोत थे। प्रत्येक मानव के उद्धार हेतु अणुव्रत का प्रवर्तन किया। अणुव्रत समिति, मुंबई की अध्यक्षा कंचन सोनी ने परिषद से आह्वान किया कि आचार्य महाश्रमण जी के चातुर्मास आगमन पर प्रत्येक व्यक्ति नशामुक्त बने। मुंबई सभा के कार्याध्यक्ष नवरतनमल गन्ना ने आचार्य तुलसी के अवदानों की चर्चा की। साध्वी संयमलता जी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी के व्यक्तित्व, कर्तृत्व व नेतृत्व को किसी फ्रेम में नहीं मढ़ा जा सकता है। आचार्यश्री सृजनशील व रचनात्मक चेतना के धनी थे। सबसे बड़ा रचनात्मक कार्य किया—मानव का निर्माण। अणुव्रत के छोटे-छोटे नियमों द्वारा आचार्य तुलसी ने मानव जाति का सही पथ-दर्शन किया।

ज्ञानशाला के बच्चों ने 'न्याय के कटघरे में नैतिकता का पहरा हो' संवाद की रोचक प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष मदनचंद तातेड़, सिरियारी संस्थान के पूर्व अध्यक्ष ख्यालीलाल तातेड़, अणुव्रत समिति महाराष्ट्र के प्रभारी रमेश धोखा, अंजू कोठारी, जैन विद्या के प्रभारी प्रेमलता सिसोदिया, श्राविका गौरव प्रकाश देवी तातेड़ एवं अच्छी संख्या में श्रद्धालुओं की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए साध्वी मार्दवश्री जी ने कहा कि अणुव्रत आचार्य तुलसी की सृजन चेतना का अमृत स्रोत है। अणुव्रत ने सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक व आध्यात्मिक सभी क्षेत्रों को प्रभावित किया है। इस आंदोलन से उत्प्रेरित हो लाखों लोगों ने अपनी जीवन दिशा व दशा बदली है। आभार ज्ञापन तेरापंथ सभा, घाटकोपर के अध्यक्ष शांतिलाल बाफना ने किया।

गंगाशहर

नैतिकता का शक्तिपीठ, गंगाशहर में मुनि शांतिकुमार जी के सान्निध्य में अणुव्रत प्रवर्तक आचार्यश्री तुलसी का १०९वाँ जन्मोत्सव अणुव्रत दिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर मुनि शांतिकुमार जी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी ने अपने महनीय अवदानों से मानवता का जो कार्य किया युगों तक जन-जन को प्रेरणा देता रहेगा। मात्र बाइस वर्ष की लघु आयु में आचार्य बनकर भी उन्होंने जिस कुशलता से संघ का संचालन किया। अपनी सूझबूझ से उन्होंने तेरापंथ धर्मसंघ को एक नई ऊँचाई दी।

मुनि जितेंद्र कुमार जी ने कहा कि आचार्य तुलसी का जीवन महानता से ओत-प्रोत था। कार्तिक शुक्ला दूज के दिन उन्होंने इस धरा पर अवतरण लिया। उनकी यशगाथा भी दूज के चांद के समान है, जो दिनोंदिन और वृद्धिंगता को प्राप्त प्राप्त हो रही है।

इस अवसर पर मुनि अनुशासन कुमार जी ने कहा कि अणुव्रत के द्वारा आचार्यश्री तुलसी ने जन-जन के भीतर एक नैतिकता की ज्योति को प्रज्वलित किया। मुनि अनेकांत कुमार जी ने भी गीत का संगान किया।

इस अवसर पर आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान के मंत्री हंसराज डागा, तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री अमरचंद सोनी, तेमम से मीनाक्षी आंचलिया, अणुव्रत समिति अध्यक्ष राजेंद्र बोथरा ने गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी के प्रति भावाभिव्यक्ति दी।

कानपुर

चंदेरी की पुण्य धरा पर आज के दिन आचार्यश्री तुलसी का जन्म हुआ। एक ऐसे व्यक्तित्व का जन्म जिसके चिंतन में उदारता, भावों में मानवता और व्यवहार में विनम्रता थी। तेरापंथ धर्मसंघ के नवम् अधिशास्ता आचार्यश्री तुलसी ने तेरापंथ संघ को नई ऊंचाईयाँ प्रदान की। अपने पुरुषार्थ की बूंदों से जैन धर्म को अंतर्राष्ट्रीय पटल पर नई पहचान दी। अणुव्रत के माध्यम से जन जागरण का कार्य किया। लंबी-लंबी यात्रा करके मानवता को संदेश देकर जन-जन का कल्याण किया।

आचार्य तुलसी स्वप्न द्रष्टा थे, जैसा सोचते-वैसा क्रियान्वित करते। अनेकानेक अवदान लोकोत्तर आयाम जग को दिए। ऐसे आचार्य के प्रति युग हमेशा ऋणी रहेगा। यह विचार डॉ० साध्वी पीयूषप्रभा जी ने सभा भवन में आयोजित अणुव्रत दिवस के कार्यक्रम में व्यक्त किए।

आचार्यश्री तुलसी का १०९ वाँ जन्म दिवस साध्वीवृंद के सान्निध्य में मनाया गया। महिला मंडल, कानपुर ने मंगलाचरण किया। साध्वी भावनाश्री जी ने आचार्य तुलसी के जीवन के प्रेरक प्रसंग सुनाए। साध्वी सुधाकुमारी जी ने गीत प्रस्तुत किए। सभा अध्यक्ष धनराज सुराणा, मंत्री संदीप जम्मड, अणुव्रत समिति अध्यक्ष टीकमचंद सेठिया, पूर्व अध्यक्ष पूनमचंद सुराणा, महिला मंडल अध्यक्षा शालिनी बुच्चा, ज्ञानार्थी मीत भूतोडिया, ज्ञानशाला के बच्चों ने गीत और वक्तव्य के द्वारा आचार्य तुलसी को श्रद्धा समर्पित की। ज्ञानार्थी कौशल, कुशाग्र मालू ने आचार्य तुलसी के जीवन का प्रसंग नाटिका के रूप में प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी दीप्तियशा जी ने किया।

कांकरोली

साध्वी मंजुयशा जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा, कांकरोली द्वारा तेरापंथ के नौवें पट्टधर आचार्यश्री तुलसी का १०९वाँ जन्म दिवस 'अणुव्रत दिवस' के रूप में मनाया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि राजसमंद विधायक दीप्ति महेश्वरी उपस्थित थी। मुख्य वक्ता विकास परिषद के सदस्य पदमचंद पटावरी उपस्थित थे।

कार्यक्रम का प्रारंभ साध्वीश्री ने नमस्कार महामंत्र के मंगल उच्चारण से किया। शोभा बोथरा ने मंगल गीत से मंगलाचरण किया। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष प्रकाशचंद सोनी ने पधारे हुए सभी अतिथियों का तेरापंथ सभा की ओर से स्वागत किया।

साध्वी मंजुयशा जी ने आचार्यश्री तुलसी के प्रति श्रद्धा व आस्था भरे भाव सुमन समर्पित करते हुए कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ में आचार्यों की यशस्वी परंपरा में आचार्यश्री तुलसी का नाम बड़े गौरव के साथ लिया जाता है। उन्होंने अपने कर्तृत्व शौर्य से जन-जन को मानवता का पावन संदेश दिया। अध्यात्म की ऊँचाइयों को स्पर्श करते हुए संघ में अनेक विकास के स्रोत खोले। अणुव्रत अभियान के द्वारा नैतिक क्रांति की। तनावमुक्ति के लिए प्रेक्षाध्यान का उपक्रम दिया। नया मोड़ अभियान द्वारा समाज में फैली हुई रूढ़ियों को दूर करने का प्रयास किया, नारी जाति का उत्थान किया। इस अवसर पर साध्वीश्री जी ने सामूहिक सुमधुर गीत प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर साध्वी चारुप्रभा जी, साध्वी इंद्रप्रभा जी ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। राजसमंद विधायक दीप्ति महेश्वरी ने एवं विकास परिषद के सदस्य पदमचंद पटावरी ने अपने विचार व्यक्त किए। कन्या मंडल द्वारा एक्शन सॉन्ग की प्रस्तुति दी। महिला मंडल की बहनों ने तुलसी जीवन झाँकी अनेक अवदानों द्वारा रोचक प्रस्तुति दी। आचार्यश्री तुलसी के १०९वें जन्म दिवस पर १०९ व्यक्तियों ने यानी युवक मंडल, किशोर मंडल, महिला मंडल, कन्या मंडल एवं ज्ञानशाला के बच्चों आदि सभी ने मिलकर एक गीत की सुमधुर एवं आकर्षक प्रस्तुति दी।

विनोद बडाला ने भी अपनी भावना गीत द्वारा प्रस्तुत की। तेरापंथ सभा की ओर से सभी अतिथियों का सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन चिन्मयप्रभा जी ने किया। इस कार्यक्रम में भाई-बहनों की उपस्थिति सराहनीय रही।

चेन्नई

आचार्यश्री तुलसी के १०९वें जन्मोत्सव का कार्यक्रम तमिलनाडु राजभवन के दरबार हॉल में राज्यपाल आर०एन० रवि एवं मुनि सुधाकर कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ माधावरम् ट्रस्ट एवं राजभवन की आयोजना में आयोजित हुआ।

राज्यपाल आर०एन० रवि ने कहा कि भारत एक अनोखा, अनूठा विशेष देश है। जहाँ विश्व के अन्य देश बाहुबल, हिंसा, ताकत से बने। वहीं भारत का निर्माण ऋषि-मुनियों की त्याग, तपस्या, साधना से अध्यात्म भरी सभ्यता, संस्कृति से बना है। आपने अंग्रेजी शिक्षा से फैली भ्रांति के बारे में कहा कि भारत देश धर्म निरपेक्ष नहीं, अपितु पंथ निरपेक्ष देश है। भारत एक परिवार है, तो धर्म उनके सदस्य हैं और धार्मिक संस्कृतियों की बदौलत ही भारत में अभी भी आध्यात्मिकता का समावेश है।

मुनि सुधाकर कुमार जी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी एक व्यक्ति ही नहीं, विचारधारा थे। वे व्यापक और विराट व्यक्तित्व के धनी थे। आचार्यश्री तुलसी अपने जीवन में आए अनेकों विरोध में भी विनोद समझकर आगे बढ़ते गए।

राजसमंद

साध्वी मंजुयशा जी के सान्निध्य में राजसमंद कारागृह में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री तुलसी के १०९वें जन्म दिवस को अणुव्रत दिवस के अंतर्गत 'नशा मुक्ति' विषय पर कार्यक्रम आयोजित हुआ। कारागृह में करीब १६८ कैदियों के बीच साध्वीश्री जी ने कहा कि जीवन के दो पक्ष होते हैं। एक कृष्ण पक्ष यानी अंधकारमय जीवन एवं दूसरा शुक्ल पक्ष यानी उजाला भरा जीवन। मनुष्य के भीतर दो प्रकार की वृत्तियाँ होती हैं एक दानवीय वृत्ति और एक मानवीय वृत्ति। जब व्यक्ति में मानवीय वृत्ति होती है तो वह अपनी प्रेम, सौहार्द, अनाग्रह, उदारता, प्रामाणिकता, सत्यता आदि सद्गुणों से अच्छा जीवन जीकर वह परिवार, समाज एवं देश के लिए आधार स्तंभ बन जाते हैं, किंतु जिसके भीतर दानवीय वृत्ति जागृत होती है तो उसके कारण वह व्यक्ति हिंसा, लूटपाट, चोरी, आगजनी, हत्या आदि अपराधी-वृत्तियों को अपनाकर अपने जीवन को अंधकार की ओर ढकेल देता है।

साध्वीश्री जी ने प्रयोग बताते हुए कहा कि प्रेक्षाध्यान, अणुव्रत के छोटे-छोटे संकल्प के द्वारा दानवीय वृत्तियों से मानवीय वृत्ति में अपने जीवन को सरस आनंद एवं सुख शांतिमय बना सकता है। साध्वीश्री जी की प्रेरणा से कई भाइयों ने नशा न करने का संकल्प किया।

इस अवसर पर अणुव्रत समिति, राजसमंद के राजकुमार दक, मदनलाल धोखा, जीतमल कच्छारा, शिक्षाविद् चतरसिंह कोठारी आदि कइयों ने अपने विचार रखते हुए अणुव्रत की जानकारी, उसके नियम, उसका महत्त्व आदि के बारे में बताया।

अणुव्रत समिति की ओर से कारागृह के अधिकारीगण एवं सभी कैदी भाइयों को फल एवं मिठाई वितरित की। मंगलपाठ से कार्यक्रम संपन्न हुआ।

भगवान महावीर का निर्वाण दिवस

जीन्द।

साध्वी संयमप्रभा जी के सान्निध्य में भगवान महावीर स्वामी का २५५० निर्वाण दिवस तेरापंथ सभा भवन, जीन्द में मनाया गया। साध्वी संयमप्रभा जी ने बताया कि भगवान महावीर स्वामी अहिंसा व शांति के अवतार थे। उन्होंने दास प्रथा, रूढ़िवादिता तथा आडम्बर युक्त धर्म का विरोध किया। भगवान महावीर स्वामी ने अहिंसा, अनेकांतवाद, आदि के माध्यम से जीने की कला का संदेश दिया। साध्वी शशिकलाजी ने भगवान महावीर स्वामी के अंतिम समय की घटना को रोचक ढंग से प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर तेरापंथ सभा, जीन्द के सहमंत्री कुणाल मित्तल, सतीश जैन, ईश्वर जैन, मास्टर राजकिशन जैन, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष उपासिका कांता मित्तल, चमेली जैन, ओमपति गोयल, निर्मला जैन आदि उपस्थित रहे।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
14 - 20 नवंबर, 2022

✦ *उपदेश सुनने की भावना भी अच्छी बात है। उपदेश की सौ बातें सुनी जाएँगी तो उसमें से दो-चार बातें जीवन में हृदयंगम भी हो सकती हैं, उतर भी सकती हैं।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

तेरापंथ प्रबोध प्रतियोगिता

हैदराबाद।

तेरापंथ महिला मंडल के तत्त्वावधान में डी०वी० कॉलोनी, तेरापंथ भवन में साध्वी त्रिशला कुमारी जी के सान्निध्य में तेरापंथ प्रबोध गीतिका की प्रतियोगिता रखी गई। जिसमें तेरापंथ प्रबोध के १ से ३१ तक के श्लोक भाई-बहनों को याद करने के लिए दिए गए। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। साध्वी त्रिशला कुमारी जी ने बताया कि यह गीतिका आचार्यश्री तुलसी द्वारा रचित है। आचार्यश्री भिक्षु स्वामी के मूल सिद्धांत इस गीतिका में भरे हुए हैं।

इस प्रतियोगिता में साध्वी कल्पयशा जी एवं साध्वी रश्मिप्रभा जी का अथक प्रयास रहा। साध्वीश्री जी की प्रेरणा से लगभग ४० भाई-बहनों ने कार्यक्रम में भाग लिया। १० ग्रुप बनाए गए। प्रोजेक्टर के माध्यम से तीन राउंड में यह प्रतियोगिता खिलाई गई।

जिसमें प्रथम संतोष पिंचा, कमला नाहटा, द्वितीय नीता डागा, मोनिका डागा, मंजु दुगड़ और तृतीय संगीता बैद, सुमित बैद, हुक्मीचंद कोटेचा, कलकाती बाई, जीतने वाले सभी भाई-बहनों को मंडल की ओर से पुरस्कार द्वारा सम्मानित किया गया।

मंत्री श्वेता सेठिया ने सभी का स्वागत किया। साध्वीश्री जी के प्रति कृतज्ञता और आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम में प्रियंका सकलेचा, अरिहंत गुजरानी, कुशाल भंसाली, मीनाक्षी सुराणा का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम की संयोजिका निशा दुगड़, डिंपल बैद, सुनीता बंबोली थी।

उत्सव रिश्तों का, प्रेम देवरानी-जेठानी का

अमराईवाडी।

शासनश्री साध्वी सरस्वती जी के सान्निध्य में अभातेममं के निर्देशन में तेममं द्वारा 'उत्सव रिश्तों का' कार्यक्रम आयोजित किया गया।

नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। मंगलाचरण महिला मंडल की बहनों ने किया। अध्यक्ष संगीता सिंघवी ने सभी का स्वागत किया एवं अपने अनुभव प्रस्तुत किए।

साध्वीश्री ने कहा कि देवरानी-जेठानी का रिश्ता बहुत ही नाजुक होता है। जहाँ यह रिश्ता अच्छा होता है, वह घर स्वर्ग बन जाता है। लंबे धागे को हमेशा लपेटकर रखना चाहिए ताकि उलझे नहीं और लंबी जबान को समेट कर रखना चाहिए जिससे विवाद न हो। सभी को आपस में प्रेम से रहना चाहिए। एक-दूसरे की भावनाओं का आदर करना चाहिए। सब के प्रति प्रमोद भाव रखना चाहिए ।

साध्वी संवेगप्रभा जी ने कहा कि 'जहाँ बड़ों का आदर और छोटों को प्यार मिले वह परिवार खुशहाल होता है।' देवरानी-जेठानी मिलजुल कर रहें, बच्चों को भी स्नेह का वातावरण मिले।

साध्वी तरुणप्रभा जी ने देवरानी-जेठानी के प्रेम को उदाहरण द्वारा दर्शाया एवं ज्ञानवर्धक गेम्स करवाने की प्रेरणा दी।

देवरानी-जेठानी के रिश्ते के कुछ खट्टे-कुछ मीठे अनुभव बहनों ने सुनाए एवं संयुक्त परिवार की महत्ता पर अपने विचार व्यक्त किए।

साथ ही देवरानी-जेठानी के बीच ज्ञानवर्धक प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। जिसमें सचित्त-अचित्त वस्तुओं को पहचानना था और दूसरी प्रतियोगिता देवरानी-जेठानी आपसी प्रेम को बलून पर कुछ लाइनों में लिखना था। दोनों ही प्रतियोगिता रोचक रही। प्रतियोगिता में तीन विजेता जोड़ियाँ रहीं—हीना, प्रिया पगारिया; सेजल, सुप्रिया मेहता; नीरू, मीना सिंघवी।

सभा के अध्यक्ष रमेश पगारिया, उपासिका मंजु गेलडा ने भी अपने विचार व्यक्त किए। मंडल द्वारा सभी बहनों का तिलक कर, उपहार भेंट कर स्वागत किया गया।

कार्यक्रम का संचालन एवं आभार ज्ञापन मंत्री लक्ष्मी सिसोदिया ने किया।

इस कार्यक्रम में देवरानी-जेठानी के १३ जोड़ों ने भाग लिया एवं अन्य बहनों और कन्या मंडल सहित सभा, तेयुप, स्थानकवासी समाज सभी की उपस्थिति रही।

राजराजेश्वरी नगर।

अभातेममं द्वारा निर्देशित 'उत्सव रिश्तों का, प्रेम देवरानी-जेठानी का' टॉक शो का आयोजन तेममं द्वारा शासनश्री साध्वी शिवमाला जी के सान्निध्य में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री जी द्वारा नमस्कार महामंत्र से हुई। अध्यक्ष लता बाफना ने सभी का स्वागत किया। साध्वी अमितरेखा जी एवं साध्वी अर्हमप्रभा जी ने कहा कि संयुक्त परिवार एवं देवरानी-जेठानी के रिश्तों में प्यार एवं मिठास बनी रहे।

टॉक शो में पधारी आठ देवरानी-जेठानी के जोड़ों ने अपने खट्टे-मिठे अनुभवों को सुनाया। साध्वी शिवमाला जी ने कहा कि एक औरत घर को स्वर्ग बना देती है और एक औरत घर को नर्क बना देती है। देवरानी-जेठानी का रिश्ता सगी बहनों के जैसा होना चाहिए।सभी देवरानी-जेठानियों का मंडल द्वारा सम्मान किया गया। बुजुर्ग देवरानी-जेठानियों के भी अनुभव सुने गए।

कार्यक्रम का संयोजन उपाध्यक्ष शोभा बोथरा ने किया एवं आभार मंत्री सीमा छोड़ ने किया।

कोयंबटूर।

अभातेममं के तत्त्वावधान में तेममं ने 'उत्सव रिश्तों का, प्रेम देवरानी-जेठानी का' कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मंडल की बहनों ने मंगलाचरण द्वारा की। बहनों ने मंडल गीत का संगान किया। तत्पश्चात अध्यक्षा मंजु गिड़िया ने आगंतुकों का स्वागत किया। साध्वी उज्जवलप्रभा जी ने प्रेरणा देते हुए कहा कि देवरानी-जेठानी में प्रेम, सौहार्द, सहानुभूति, सहनशीलता, परस्पर सामंजस्य सकारात्मक सोच व सम्मान का भाव रहना चाहिए। १५ वर्ष से ऊपर एक साथ रह रही देवरानी- जेठानी ने अपने-अपने विचार रखे। देवरानी-जेठानी पर आधारित उपाध्यक्षा रूपकला भंडारी ने सुंदर मारवाड़ी गीत गुनगुनाते हुए बहनों को गेम खिलाया तथा उनका सम्मान किया। रोमांचक गेम्स मंडल की बहनें ममता पुगलिया, रोहिणी सेठिया द्वारा खिलाए गए। कार्यक्रम का संचालन गुणवंती बोहरा ने किया एवं धन्यवाद ज्ञापन रोहिणी सेठिया ने दिया। कार्यक्रम में लगभग ७० बहनों की उपस्थिति रही।

'आपकी अदालत' नाटक का मंचन

पीलीबंगा।

साध्वी रचनाश्री जी के सान्निध्य में तेममं और कन्या मंडल ने साध्वी रचनाश्री जी एवं सुमन नाहटा द्वारा बनाया गया समाज की ज्वलंत समस्या तलाक पर आधारित 'आपकी अदालत' नाटक का मंचन किया गया।

इस अवसर पर साध्वीश्री जी ने कहा कि 'जीवन में कम खाना, गम जाना और नम जाना' इन तीन सूत्रों को अपनाया जाए तो जीवन में शांति रह सकती है। कथा के माध्यम से बताया कि अगर नमना सीख लें और दृष्टिकोण बदल जाए तो एक नरक तुल्य ससुराल यमराज तुल्य बना पति भी देवलोक के समान ससुराल और पति देवता के समान हो जाते हैं। साध्वीश्री जी ने कहा कि परिवार में एक-दूसरे के साथ सामंजस्य बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए।

साध्वी गीतार्थप्रभा जी ने उपस्थित जज के सामने दूसरे केस की दलीलें कविता के माध्यम से पेश की। इस कार्यक्रम के प्रायोजक ओम प्रकाश नौलखा और जयप्रकाश नौलखा ने नाटक की प्रस्तुतिकर्ताओं और नाटक का संयोजन तेममं की मंत्री हेमलता डाकलिया को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम का संचालन मधु बोथरा ने किया। महिला मंडल की अध्यक्ष ने अपने विचार व्यक्त किए।

नवरात्रा पर हुआ महासती सुभद्रा पर परिसंवाद

बालोतरा।

तेममं के तत्त्वावधान में तेरापंथ कन्या मंडल द्वारा मुनि मोहजीत कुमार जी के सान्निध्य में 'द्वार खुल गए' शीर्षक से महासती सुभद्रा जीवन चरित्र पर आधारित परिसंवाद की प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम महिला मंडल अध्यक्ष निर्मला संकलेचा द्वारा नमस्कार महामंत्र से शुरू हुआ।

कन्या मंडल की कन्याओं द्वारा प्रेरणा गीत से मंगलाचरण किया तथा नाटिका की प्रस्तुति की गई। कार्यक्रम का संयोजन श्वेता सालेचा ने किया। इस कार्यक्रम में नगर परिषद चेयरमैन सुमित्रा वैद, ओसवाल समाज अध्यक्ष शांतिलाल डागा, सभा अध्यक्ष धनराज ओस्तवाल उपस्थित रहे।

अंत में आभार ज्ञापन महिला मंडल मंत्री संगीता बोथरा ने किया। इसके साथ वृहद संख्या में जैन श्रावक समाज उपस्थित हुआ।

पुस्तकें ज्ञान का भंडार होती हैं

कोयंबटूर।

अभातेममं के निर्देशानुसार समृद्ध राष्ट्र योजना के अंतर्गत तेममं द्वारा 'फीड द माइंड' पाठशाला पुस्तकालय परियोजना का उद्घाटन माराना गाउडर हाईस्कूल में किया गया। साध्वी उज्ज्वलप्रभा जी आदि सहयोगी साध्वियों के मार्गदर्शन में कार्यक्रम हुआ। कोयंबटूर के संस्कारक निर्मल बेगवानी ने जैन संस्कार विधि से पुस्तकालय का उद्घाटन करवाया। नेहरू विद्यालय हायर सेकेंडरी स्कूल की प्रिंसिपल पंकज रघुनाथन इस कार्यक्रम की मुख्य अतिथि रहीं।

घीसूलाल हिंगड़, गुलाब मेहता, सभा अध्यक्ष उत्तमचंद पुगलिया व अन्य सभा-संस्थाओं के गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण तेममं की मंत्री आरती रांका, सहमंत्री कनकप्रभा बुच्चा द्वारा हुई।

महिला मंडल अध्यक्षा मंजु गिडिया ने सभी का स्वागत किया। पंकज रघुनाथन ने तमिल, अंग्रेजी भाषा में वक्तव्य दिया। राजस्थानी संघ के पूर्व अध्यक्ष घीसूलाल हिंगड़ ने अपने विचार रखे।

स्थानकवासी संप्रदाय से गुलाब मेहता ने कहा कि पुस्तकें पढ़कर जीवन में परिवर्तन लाया जा सकता है। माराना गाउडर हाईस्कूल के सेक्रेटरी लक्ष्मण नारायण ने मंडल को धन्यवाद दिया।

स्थानीय तेरापंथ सभा के अध्यक्ष उत्तमचंद पुगलिया ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संयोजन सहमंत्री ज्योति सुराणा ने किया। धन्यवाद ज्ञापन प्रचार-प्रसार मंत्री मोनिका कोटेचा ने किया। मंडल द्वारा माराना गाउडर हाईस्कूल में २५० से अधिक पुस्तकें, २ बड़ी डाइनिंग टेबल, १० चेयर आदि अन्य समान बच्चों को वितरित कराया। लाइब्रेरी रूम को न्यू पेंट कराया गया और महिला मंडल का लोगो लगाया गया। इस कार्यक्रम में लगभग १०० अध्यापक, शिक्षार्थी, सभा-संस्था के गणमान्य व्यक्ति और कन्या मंडल, महिला मंडल की बहनें उपस्थित रहीं।

विज्ञान कार्यशाला का आयोजन

बालोतरा।

क्या है विज्ञान? समस्या या समाधान, ह्रास या विकास का सोपान, अभिशाप या वरदान—जैसे अनेक प्रश्नों का उत्तर देने मुनि मोहजीत कुमार जी के सान्निध्य में विज्ञान कार्यशाला का आयोजन तेममं के तत्त्वावधान में तेरापंथ कन्या मंडल द्वारा किया गया।

मुख्य वक्ता वैज्ञानिक करण सिंह सिंघवी ने विज्ञान के अनेक गूढ़ तथ्यों को प्रयोग के धरातल पर उतार उपस्थित परिषद को सहजता से समझाया। प्रयोग में छिपे जीवन बोध को प्रस्तुत करते हुए मुनि जयेश कुमार जी ने विज्ञान को आध्यात्मिकता के साथ जोड़ने का प्रयास किया।

इस अवसर पर मुनि मोहजीत कुमार जी ने कहा कि व्यक्ति बाहरी विज्ञान के साथ जीवन के विज्ञान को भी समझने का प्रयास करे। मुनि जयेश कुमार जी ने छोटे-छोटे उदाहरणों से बताया कि कैसे विज्ञान का सही बोध मनुष्य के प्रत्येक कार्य को आसान बना सकता है।

वैज्ञानिक करण सिंह सिंघवी का परिचय कन्या मंडल संयोजिका साक्षी वेद मूथा ने दिया। आभार ज्ञापन तेममं मंत्री संगीता बोथरा ने किया। इस अवसर पर समाज के विशिष्ट गणमान्य व्यक्तियों के साथ आदर्श विद्या मंदिर विद्यालय के शिक्षक और विद्यार्थियों की विशेष उपस्थिति रही।

✦ *अभय की साधना करने वाला सुखी बन सकता है। भय और तनाव दुःख पैदा करता है।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

नमिऊण कल्प अनुष्ठान का आयोजन

रोहिणी, दिल्ली।

साध्वी डॉ० कुंदनरेखा जी के सान्निध्य में एवं तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में शरद पूर्णिमा के प्रातःकालीन सत्र में 'नमिऊण कल्प अनुष्ठान' का वृहद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के प्रस्तुतकर्ता विख्यात वास्तु शास्त्री उमेद दुगड़ ने मंत्र की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि प्रत्येक अक्षर में शक्ति होती है। अक्षरों की सही संयोजना से मनवांछित फल प्राप्ति की जा सकती है। उन्होंने कहा कि मंत्र साधना से पूर्व आसन, मुद्रा और सुरक्षा कवच जरूरी होता है।

साध्वी कुंदनरेखा जी ने कहा कि बत्तीस आगमों में चंद्र प्रज्ञपती सूत्र/आगम की दूसरी गाथा-नमिऊण असुर सुर----बहुत प्रभावकारी मंत्र है। विघ्नहरण की ढाल में जयाचार्य ने भी ऐसा उल्लेख किया है, विघ्नहरण करने वाले मंत्र की साधना संभवतः आचार्य भिक्षु, जयाचार्य आदि तेरापंथ के प्रभावक सभी आचार्यों ने की होगी। यह मंत्र चेतना में चतुर्मुखी विकास का द्योतक है।

साध्वीश्री जी ने कहा कि श्रावक उमेद दुगड़ वास्तु शास्त्री के साथ-साथ धर्मसंघ के विशिष्ट श्रावक हैं, जो अपने कार्यक्रमों के माध्यम से धर्मसंघ और गुरुओं की प्रभावना करते हैं।

उमेद दुगड़ ने 'नमिऊण' के प्रत्येक अक्षर का अलग-अलग संख्या में जप अनुष्ठान का आह्वान किया और साध्वी कुंदनरेखा जी आदि साध्वियों ने उनका जप कर जनता को प्रेरित किया।

तेरापंथी सभा रोहिणी के अध्यक्ष विजय जैन ने कार्यक्रम की सराहना की और सभा की तरफ से आचार्यश्री महाश्रमण जी का फोटो, पुस्तक आदि के द्वारा उमेद दुगड़ का सम्मान किया। इस अवसर पर लगभग १२५ लोगों की सहभागिता रही। रतनलाल जैन, अनिल जैन, सभा महामंत्री राजेंद्र सिंघी, उपाध्यक्ष सुरेंद्र जैन, चिराग जैन, पश्चिम विहार सभाध्यक्ष सुशील जैन आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

'आओ जानें वीर प्रभु को' प्रतियोगिता का आयोजन

सिकंदराबाद।

साध्वी त्रिशला कुमारी जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में 'आओ जानें वीर प्रभु को' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। राजेंद्र बोथरा ने बताया कि साध्वी रश्मिप्रभा जी के मंगलाचरण से कार्यक्रम शुभारंभ हुआ। सभा के अध्यक्ष बाबूलाल बैद ने प्रतियोगियों का उत्साहवर्धन करते हुए मंगलकामना व्यक्त की।

साध्वी त्रिशला कुमारी जी ने कहा कि प्रतियोगिता के माध्यम से सबको ज्ञानाराधना करने का सुंदर मौका मिला है। यह ज्ञान प्राप्ति के प्रति जिज्ञासा हमारे दिमाग में ब्राइट बनाती है। हमारी चेतना को निर्मल, पावन और पवित्र बनाती है।

यह प्रतियोगिता तेरापंथी सभा, के तत्त्वावधान में आयोजित की गई। जिसमें नौ टीमों ने अपनी तैयारी के साथ प्रतियोगिता में भाग लिया। कुल पाँच राउंड में प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। जिसमें पहला स्थान महिला मंडल की टीम ने प्राप्त किया। द्वितीय स्थान बैद परिवार की टीम ने प्राप्त किया व तृतीय स्थान कन्या मंडल की टीम ने प्राप्त किया। प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले संभागियों को तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद की ओर से पुरस्कार वितरण किया गया।

कार्यक्रम की सफलता में साध्वी कल्पयशा जी एवं साध्वी रश्मिप्रभा जी का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। वहीं कार्यक्रम के संयोजक प्रकाश दफ्तरी, अरिहंत गुजरानी और खुशाल भंसाली का श्रम सराहनीय रहा। कार्यक्रम का संचालन साध्वी रश्मिप्रभा जी ने किया। सभा के मंत्री सुशील संचेती ने आभार ज्ञापन किया।

१३० सामूहिक आयंबिल तप आराधना

कांटाबाजी।

मुनि प्रशांत कुमार जी के सान्निध्य में तेमम द्वारा सामूहिक आयंबिल तप आराधना हुई। मुनि कुमुद कुमार जी ने कहा कि जैन धर्म में साधना का बहुत महत्त्व है। विभिन्न प्रकार की साधना के द्वारा पूर्व बंधे हुए कर्मों को क्षय किया जाता है। कर्मों से मुक्त होने पर आत्मा शरीर से मुक्त, दुःख से मुक्त एवं संसार से मुक्त होकर सिद्धावस्था को प्राप्त कर लेती है।

आयंबिल तप आत्मा को उज्ज्वल बनाने के साथ शरीर को आरोहण प्रदान करता है। मीडिया प्रभारी अविनाश जैन ने बताया कि तेमम के आयोजन में १३० साधकों ने आयंबिल तप आराधना की। मुनि कुमुद कुमार जी ने सामूहिक रूप से जप अनुष्ठान करवाया। ज्योति जैन ने आयंबिल के महत्त्व को बताया। अंकिता आशीष जैन ने कृतज्ञता व्यक्त की।

अभातेयुप योगक्षेम योजना

योगक्षेम

✳ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
✳ श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
✳ श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
✳ श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई	5,00,000
✳ श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
✳ श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
✳ श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
✳ श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
✳ श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000
✳ श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा	5,00,000
✳ श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	5,00,000
✳ श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छापर-सिलीगुड़ी	5,00,000
✳ श्री बसंत नवलखा, बीकानेर	5,00,000
✳ श्री बिमल चोपड़ा, गंगाशहर-यमुनानगर	5,00,000
✳ श्रद्धानिष्ठ श्रावक केशरीमल, अनिलकुमार, संजयकुमार, सुनीलकुमार चंडालिया (गंगापुर) सूरत	5,00,000

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

नामकरण संस्कार

हैदराबाद।

सरदारशहर निवासी, हैदराबाद प्रवासी प्रियंका दस्सानी व प्रतीक दस्सानी के सुपुत्र का नामकरण संस्कार संस्कारक ललित लुनिया एवं जिनेंद्र बैद ने शुद्ध मंत्रोच्चार द्वारा करवाया। सर्वप्रथम सामूहिक मंगलाचरण से कार्यक्रम की शुरुआत हुई।

इस अवसर पर तेयुप अध्यक्ष विरेंद्र घोषल, उपाध्यक्ष विनोद दुगड़, तेयुप पूर्व अध्यक्ष प्रवीण बैंगानी एवं कई गणमान्यजन उपस्थित रहे।

सिलीगुड़ी।

सादुलपुर निवासी, सिलीगुड़ी प्रवासी अमित-गायत्री देवी धारेवा के सुपुत्र का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक नरेंद्र सिंघी एवं संस्कारक दीपक बोथरा द्वारा करवाया गया।

अध्यक्ष सुशील कुमार मालू ने सभी का स्वागत-अभिनंदन किया तथा सुरेंद्र संतोष देवी धारेवा को धन्यवाद दिया तथा आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में तेयुप के उपाध्यक्ष-द्वितीय अमित, पारख, सहमंत्री-द्वितीय विक्रम मालू एवं कोषाध्यक्ष नरेश धारेवा उपस्थित थे।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

इचलकरंजी।

प्रमोद बरड़िया के नूतन शोरूम का उद्घाटन जैन संस्कार विधि से संस्कारक विकास सुराणा ने मांगलिक मंत्रोच्चार द्वारा संपादित करवाया।

तेयुप के अध्यक्ष महेश पटावरी ने बरड़िया परिवार को बधाई प्रेषित की। परिवार की तरफ से सभा के अध्यक्ष महेंद्र गिड़िया ने पधारे हुए संस्कारकगण एवं तेयुप इचलकरंजी के प्रति आभार ज्ञापित किया।

परिषद की ओर से स्मृति चिह्न के रूप में बरड़िया परिवार को मंगलभावना पत्रक की भेंट दी गई।

सूरत।

नोहर निवासी, सूरत प्रवासी सुनील कुमार गादिया के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक मनीष कुमार मालू, नरेंद्र भंसाली ने संपूर्ण विधि व मंगल मंत्रोच्चार द्वारा संपन्न करवाया।

कार्यक्रम को संपादित करवाने में ललित दुगड़ का सहयोग रहा। सुनील कुमार व उनके पूरे परिवार ने संस्कारकों व सभी पारिवारिकजनों का आभार ज्ञापन किया।

भूमि पूजन

भुज।

मनसुखलाल महादेव भाई मेहता और मुंबई के भोगीभाई, मावजीभाई बोरा परिवार के नवनिर्मित प्रोजेक्ट का भूमि पूजन संस्कार प्रभुभाई मेहता, नरेंद्रभाई मेहता, भरत बाबरिया ने मंगल मंत्रोच्चार द्वारा संपादित किया गया।

बोरा परिवार के भोगीभाई ने तेयुप भुज के प्रति आभार व्यक्त किया। तेयुप अध्यक्ष आशीष बाबरिया द्वारा पारिवारिक जनों को मंगलभावना यंत्र भेंट स्वरूप प्रदान किया।

इस अवसर पर डॉ० मुनि पुलकित कुमार जी और मुनि आदित्य कुमार जी ने आकर मंगलपाठ सुनाया। कार्यक्रम में कच्छ के राजवी परिवार की महारानी प्रीतिदेवी की विशेष उपस्थिति रही।

नूतन क्लिनिक का शुभारंभ

मरोल (मुंबई)।

अशोक बाफना के सुपुत्र डॉ० प्रदीप बाफना व डॉ० राखी बाफना के डेंटल क्लिनिक का उद्घाटन जैन संस्कार विधि से संपन्न हुआ।

संस्कारक सुरेश ओस्तवाल एवं सहयोगी उपासक अशोक चौधरी ने विधिवत् मंत्रोच्चार द्वारा कार्यक्रम संपन्न करवाया।

परिवार ने संस्कारक टीम के प्रति आभार ज्ञापित किया। संस्कारक टीम द्वारा मंगल भावना यंत्र भेंट किया गया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
14 - 20 नवंबर, 2022

✦ *हम अहिंसा की साधना करते हुए कषाय को प्रतनु करने का प्रयास करें।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह का आयोजन

बालोतरा।

अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह के अंतर्गत स्थानीय तेरापंथ भवन में सांप्रदायिक सौहार्द दिवस मनाया गया। मुनि मोहजीत कुमार जी ने कहा कि सभी धर्मों में सकारात्मकता ही असली सौहार्द है। वर्ण, जाति और संप्रदाय से ऊपर मानव धर्म है। विचारों का सामंजस्य ही धर्म है। सबके प्रति मैत्री, करुणा का भाव सदैव बना रहे, यही सौहार्द है।

मुनि जयेश कुमार जी ने कहा कि महान व्यक्ति चुनौतियों से घबराता नहीं है। अनेकता में एकता में विश्वास करना ही सौहार्द है। इस अवसर पर मौलाना पीर बक्श साहब ने कहा कि हर धर्म की धार्मिक किताब है। जगत में प्राणी मात्र को अपना हक मिलना चाहिए, यही आदर्श ही असली सौहार्द है।

ब्रह्मकुमारी संस्थान से उमा दीदी ने कहा कि जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि, जैसा भाव वैसा काम और जैसी सोच वैसा ही फल मिलता है। अध्यात्म प्रत्येक व्यक्ति को मान्य है, मगर उसके अनुरूप कार्य करना भी आवश्यक है।

कार्यक्रम में अणुव्रत गीत का संगान किया गया। पधारे हुए धर्मगुरु एवं अन्य विशिष्टजनों का स्वागत अध्यक्ष जरेवीलाल सालेचा द्वारा किया गया। समिति उपाध्यक्ष कमला देवी ओस्तवाल ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन संयोजक नवीन सालेचा ने किया। अणुव्रत समिति द्वारा धर्मगुरुओं का साहित्य और फोल्डर द्वारा सम्मान किया गया।

जीवन विज्ञान दिवस पर स्थानीय वर्धमान सीनियर से० विद्यालय में मुनि मोहजीत कुमार जी के सान्निध्य में कार्यक्रम आयोजित हुआ। मुनिश्री ने कहा कि जीवन विज्ञान शिक्षा जगत का प्रकल्प है। शिक्षा के साथ-साथ जीवन में बहुमुखी विकास के निर्माण में जीवन-विज्ञान बहुत उपयोगी है। यह समाज, राष्ट्र, परिवार में सुखद जीवन जीने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। मुनिश्री ने विद्यार्थियों को महाप्राण ध्वनि का प्रयोग करवाया और संकल्पों के साथ जीवन जीने की प्रेरणा प्रदान की।

द्वितीय चरण मुनिश्री ने कहा कि अभी नवरात्रि के अनुष्ठान का क्रम चल रहा है। हम सभी शक्ति के इस पर्व में मंत्रों की आराधना करते हुए अपने आपको शक्तिसंपन्न बनाने का प्रयास करें। जीवन-विज्ञान अपने आपमें जीवन जीने की कला है।

कार्यक्रम में अणुव्रत गीत का संगान किया गया। अणुव्रत समिति के संरक्षक ओम बांठिया ने अपनी भावना व्यक्त की। विद्यालय प्राचार्य पूनमचंद सुथार ने मुनिश्री का स्वागत किया एवं समिति का आभार व्यक्त किया। अणुव्रत समिति द्वारा विद्यालय परिवार को फोल्डर और साहित्य भेंट किया गया। कार्यक्रम में विद्यालय ट्रस्टी पुष्पराज तातेड़, तेरापंथ सभा अध्यक्ष धनराज ओस्तवाल, समस्त शिक्षकगण की उपस्थिति रही।

स्थानीय राजकीय सि० से० बालिका विद्यालय में अणुव्रत प्रेरणा दिवस पर मुनि मोहजीत कुमार जी ने कहा कि जीवन मूल्यों के निर्माण में अणुव्रत एक आदर्श है। अणुव्रत जीवन जीने की कला सिखाता है। हमारे भीतर ज्ञान और संस्कार दोनों का समन्वय होना जरूरी है। छोटे-छोटे संकल्पों से व्यक्ति के जीवन में निखार आता है। परिवार, समाज और राष्ट्र की उन्नति के लिए बच्चों में संस्कारों का बीजारोपण अणुव्रत के माध्यम से किया जा सकता है।

विद्यालय परिवार से भगवानसिंह ने मुनिप्रवर का स्वागत किया एवं अणुव्रत समिति का आभार व्यक्त किया। अणुव्रत सेवी ओमप्रकाश बांठिया ने समिति की ओर से विद्यालय परिवार एवं विद्यार्थियों का आभार व्यक्त किया।

अणुव्रत समिति की ओर से विद्यालय परिवार को साहित्य एवं फोल्डर से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन संयोजक नवीन सालेचा ने किया।

अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह के अंतर्गत नशामुक्ति एवं पर्यावरण दिवस स्थानीय शांति निकेतन विद्यालय से रैली का आयोजन किया गया, जिसे नगर परिषद सभापति सुमित्रा जैन, अणुव्रत समिति संरक्षक ओमप्रकाश बांठिया, तेरापंथ सभा अध्यक्ष धनराज ओस्तवाल, अणुव्रत समिति अध्यक्ष जवेरीलाल सालेचा, महिला मंडल अध्यक्षा निर्मला संकलेचा, तेयुप एवं अणुव्रत समिति के पदाधिकारीगण एवं विद्यालय ट्रस्टी ओम चोपड़ा, प्रकाश बालड़, विद्यालय के प्राचार्य और शिक्षकगणों द्वारा रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। पर्यावरण व नशामुक्ति के संदेश के साथ रैली शहर के मुख्य मार्गों से गुजरती हुई न्यू तेरापंथ भवन में पहुँची।

मुनि मोहजीत कुमार जी ने कहा कि जीवन में नशा करना बुरी बात है, हम इसे बदलें। कभी भी किसी भी स्थिति में नशा नहीं करने का संकल्प लें। नशे से स्वयं का और परिवार का नुकसान संभव है। पर्यावरण के प्रति हमारी सजगता ही इसके वातावरण को शुद्ध और स्वच्छ रख सकती है। हम अपनी छोटी-छोटी आदतों में सुधार लाकर भी पर्यावरण की सुरक्षा कर सकते हैं।

कार्यक्रम का संयोजन संयोजक नवीन सालेचा ने किया। अणुव्रत समिति द्वारा विद्यालय परिवार का साहित्य एवं फोल्डर द्वारा स्वागत किया एवं सभी शिक्षकगणों और विद्यार्थियों का आभार प्रकट किया।

अनुशासन दिवस स्थानीय मदर टेरेसा सि०से० विद्यालय में मनाया गया। इस अवसर पर मुनिश्री ने कहा कि अनुशासन हमारे जीवन की निधि है। हमारे जीवन में हर छोटी-छोटी बात में अनुशासन का होना जरूरी है। दैनिक दिनचर्या का भी कार्य हमें सजगता से अनुशासनपूर्वक करना चाहिए। मुनिश्री द्वारा विद्यार्थियों को महाप्राण ध्वनि का प्रयोग करवाया गया।

विद्यालय संस्थापक कमलेश बोहरा ने मुनिश्री का स्वागत-अभिनंदन किया और अपने विचार व्यक्त किए। अणुव्रत समिति द्वारा विद्यालय परिवार का साहित्य एवं फोल्डर से सम्मान किया गया।

अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह के अंतिम दिवस विश्व अहिंसा दिवस के रूप में मनाया गया। मुनि मोहजीत कुमार जी ने कहा कि मन में अहिंसा की चेतना का जागरण होना जरूरी है। आचार्य महाप्रज्ञ जी ने कहा था—अहिंसा की चेतना का जागरण और नैतिक मूल्यों का विकास होना अनिवार्य हो। भगवान महावीर ने पूरे विश्व में अहिंसा का प्रकाश फैलाया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एसआईपी डिम्पल कंवर ने कहा कि व्यक्ति मन, वचन, कर्म से किसी भी प्राणी मात्र या जीव को कष्ट नहीं पहुँचाए, यही अहिंसा है। आरएसएस प्रमुख पूनमचंद सुधार ने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि मौन में अणुबम जितनी शक्ति है। शांति, अहिंसा और अणुव्रत मानव जाति के लिए एक सुंदर संदेश है। पूर्व नगर परिषद चेयरमैन प्रभा सिंघवी ने अहिंसा को प्राणी मात्र का रक्षा कवच बताया और कहा कि तन-मन एवं भावों से अहिंसा का पालन करना चाहिए।

अणुव्रत सेवी ओमप्रकाश बांठिया ने अहिंसा दिवस पर दृढ़ संकल्पी होने की प्रेरणा दी। तेरापंथ सभा अध्यक्ष धनराज ओस्तवाल ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष जवेरीलाल सालेचा ने अणुव्रत गीत का संगान किया एवं सभी का आभार व्यक्त किया। अणुव्रत समिति द्वारा मुनि मोहजीत कुमार जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई। कार्यक्रम का संचालन संयोजक नवीन सालेचा ने किया। विशिष्ट अतिथियों को समिति द्वारा साहित्य एवं फोल्डर देकर सम्मानित किया गया। सात दिवसीय अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह में सहयोग एवं उपस्थिति हेतु तेरापंथ सभा, महिला मंडल, तेयुप और पूरी अणुव्रत समिति का आभार व्यक्त किया गया।

✦ *जितना-जितना आदमी के जीवन में संयम बढ़ता है, त्याग बढ़ता है, उससे धर्म की पुष्टि होती है और जितना जीवन में असंयम बढ़ता है, उससे अधर्म की वृद्धि होती है।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

प्रतिक्रमण कार्यशाला एवं वृहद मुंबई उपासक संगोष्ठी

ठाणे।

शासनश्री जिनरेखा जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा भवन में प्रतिक्रमण कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ सभा द्वारा किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री जी द्वारा नमस्कार महामंत्र से की गई। उपासिका बहनों ने उपासक गीत द्वारा मंगलाचरण किया।

साध्वी जिनरेखा जी ने कहा कि प्रतिक्रमण से व्रत के छेद रुक जाते हैं, व्रत के छेद रुकने से आश्रव द्वारा बंद हो जाता है। व्यक्ति विभाव से स्वभाव में आता है। मुक्ति मार्ग को अपने निकट कर लेता है।

उपासक संयोजक सूर्यप्रकाश शामसुखा ने आत्म-विकास की पहली भूमिका समत्व और उसके आगे की भूमिका महाव्रत और देश व्रत को समझाते हुए बताया कि छद्मस्ता की अवस्था में ग्रहण किए हुए व्रतों में दोष लगने की संभावना रहती है, जिससे जीवन विराधक बन जाता है पर प्रतिक्रमण से दोष शुद्धि होती है। जीव पुनः आराधक बन जाता है।

ठाणे के सभी जागरूक श्रावक-श्राविकाएँ, आसपास के क्षेत्र मुलुंड, भांडुप, वाशी, एरोली आदि के भाई-बहनों की सहभागिता रही।

तेरापंथी सभा के अध्यक्ष रमेश सोनी ने शामसुखा का स्वागत व सम्मान किया। उपासिका प्रतिभा चोपड़ा ने उपासक संयोजक सूर्य प्रकाश का परिचय दिया। उपासिका सरला भुतोड़िया ने स्वरचित गीतिका का संगान किया।

भिक्षु महाप्रज्ञ ट्रस्ट के अध्यक्ष निर्मल श्रीश्रीमाल ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन साध्वी मार्दवयशा जी ने किया।

दूसरे चरण में आयोजित 'वृहद मुंबई स्तरीय उपासक संगोष्ठी' में ५० के लगभग उपासक-उपासिकाएँ शामिल हुए। संयोजक एसपी सामसुखा ने गुरुदेव तुलसी व आचार्य महाश्रमण जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए उपासक श्रेणी का इतिहास संक्षेप में बताया। उपासकों द्वारा की गई जिज्ञासाओं का समुचित समाधान दिया गया।

पंच परमेष्ठी रक्षा कवच का अनुष्ठान

माधावरम्, चेन्नई।

मुनि सुधाकर कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ माधावरम् ट्रस्ट के तत्त्वावधान में प्रबल पंच परमेष्ठी रक्षा कवच का अनुष्ठान आयोजित हुआ। जिसमें सैकड़ों लोगों ने भाग लिया।

मुनिश्री ने कहा कि पंच परमेष्ठी मंत्र ही नहीं महामंत्र है। इसे जैन शासन में मंत्राधिराज के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। लगभग डेढ़ हजार वर्षों की अवधि से पहले इस महामंत्र की विपुल साहित्य की रचना हुई है।

मुनिश्री ने आगे कहा कि नमस्कार महामंत्र आधि, व्याधि एवं उपाधि से मुक्ति प्रदान कर हमें समाधि प्रदान करता है। यह महामंत्र शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक एवं आध्यात्मिक आरोग्य का पोषण करता है।

भारतीय प्रशासनिक अधिकारी एवं तमिलनाडु राज्यपाल के निजी सचिव आनंद पाटील ने परिवार सहित जैन तेरापंथ नगर स्थित तेरापंथ भवन में मुनि सुधाकर कुमार जी एवं मुनि नरेश कुमार जी के दर्शन किए। आनंद पाटिल का सम्मान माधावरम् ट्रस्ट के प्रबंध न्यासी घीसूलाल बोहरा, अशोक परमार, सुरेश रांका, संतोष परमार, प्रवीण सुराणा, अरुण परमार एवं विनीत बेद ने किया।

भगवान महावीर निर्वाण कल्याणक दिवस मनाया गया

कानपुर।

कार्तिक अमावस्या के दिन 'भगवान महावीर निर्वाण कल्याणक दिवस' मनाया गया। सभा अध्यक्ष धनराज जी सुराणा ने सभी के प्रति दीपावली की मंगलकामना की। महावीर स्वामी का सामूहिक रूप से जप कराया गया। साध्वी डॉ० पीयूषप्रभा जी ने भगवान महावीर के जीवन पर प्रकाश डाला। साध्वी जी ने कहा कि यह दीपों का त्योहार हर व्यक्ति के जीवन में आध्यात्मिक ज्योति लाए और श्रद्धा से जीवन पावन और सुखकर बने। दिवाली की छुट्टियों का उपयोग करते हुए बच्चों की संस्कार कार्यशाला रखी गई, जिसमें बच्चों ने उत्साह के साथ भाग लिया। साध्वी दीप्तियशा जी ने जैन धर्म और त्याग के महत्त्व को बताया। मोबाइल फोन के फायदे और नुकसान बताए। एक रोचक प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया, जिसमें संयम और अविशा जैन प्रथम, कर्तव्य जम्मड़ द्वितीय एवं अंश और कुशाग्र मालू तृतीय रहे। कार्यशाला में प्रभा मालू, प्रियंका भूतोडिया और संदीप जम्मड़ का विशेष सहयोग रहा।

ज्ञानशाला के विविध आयोजन

विजयनगर

तेरापंथी सभा, विजयनगर के तत्त्वावधान में संचालित ज्ञानशाला द्वारा दो दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया। कार्यशाला का प्रथम दिन सर्वप्रथम सामूहिक नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। लगभग १५० बच्चों ने रजिस्ट्रेशन करवाकर अपना नाम दर्ज करवाया एवं पहले सेशन में योगा प्रशिक्षिका सुरभि जैन ने बच्चों को शारीरिक व्यायाम करवाया।

मुनि रश्मि कुमार जी का सान्निध्य प्राप्त हुआ। मुनिश्री ने अच्छे संस्कार कैसे मूल्यवान हैं, इसकी जानकारी दी। सभा अध्यक्ष प्रकाश गांधी ने ज्ञानशाला परिवार एवं सभी बच्चों के प्रति शुभकामनाएँ प्रेषित की।

मंत्री मंगल कोचर ने अपनी भावना व्यक्त की। सभा निवर्तमान अध्यक्ष राजेश चावत एवं महिला मंडल अध्यक्षा प्रेम भंसाली, मंत्री सुमित्रा बरड़िया ने शुभकामनाएँ प्रेषित की। मुनि प्रियांशु कुमार जी ने उद्गार व्यक्त किए।

अगले सत्र में कायोत्सर्ग ध्यान छतर मालू ने करवाया। तन्वी और भूमिका मांडोत ने क्राफ्ट से बच्चों को क्रिएटिविटी ग्रीटिंग कार्ड बनाना सिखाया। प्रोजेक्टर के माध्यम से स्वर्ग-नरग गति की एनीमेशन मूवी बताई गई।

कार्यक्रम के संपूर्ण दो साल के प्रायोजक हनुमानमल, संजय बैद के प्रति सभा परिवार की तरफ से आभार व्यक्त किया गया।

राजसमंद

ज्ञानशाला राजनगर का वार्षिक उत्सव मुनि प्रसन्न कुमार जी के सान्निध्य में संपन्न हुआ। तेयुप के मंत्री अंकित परमार ने बताया कि कार्यक्रम की शुरुआत मुनिश्री ने नवकार महामंत्र से की। वार्षिक उत्सव के मुख्य अतिथि पदमचंद पटावरी, विशिष्ट अतिथि सुरेशचंद कावड़िया, अशोक डूंगरवाल, सभाध्यक्ष ख्यालीलाल चपलोत, अभिषेक कोठारी, मुकेश कोठारी, विकास मादरेचा, सागरमल दुगड़ ने अपने विचार व्यक्त किए। महिला मंडल अध्यक्षा सीमा कावड़िया, अभातेममं सदस्या नीना कावड़िया, अभातेयुप के राष्ट्रीय समिति सदस्य भूपेंद्र मादरेचा और भिक्षु बोधि स्थल मंत्री मंजु बड़ोला, तेयुप अध्यक्ष भूपेश धोका और मंत्री अंकित परमार उपस्थित थे।

वार्षिक उत्सव में मुनि प्रसन्न कुमार जी ने कहा कि बच्चों का स्वागत संयोजिका संगीता कोठारी ने किया। कार्यक्रम में ज्ञानशाला के बच्चों ने फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता, कव्वाली, लघु नाटक सहित अनेक मनोरंजक प्रस्तुति दी। सभी प्रशिक्षिकाओं का पूरा सहयोग रहा। कार्यक्रम का संचालन उषा कावड़िया ने किया। आभार व्यक्त मुख्य प्रशिक्षिका सीमा मांडोत ने किया।

भुवनेश्वर

ज्ञानशाला का 'वार्षिक उत्सव' मुनि डॉ० ज्ञानेंद्र जी के सान्निध्य में मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुनिश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र से किया गया। मंगलाचरण ज्ञानशाला प्रशिक्षिका द्वारा तुलसी अष्टकम के माध्यम से किया। ज्ञानशाला संयोजिका नयनतारा सुखाणी ने सभी का स्वागत किया। बच्चों को ज्ञानशाला भेजें, इस पर सभी अभिभावकों को प्रेरणा दी। मुनि पदम कुमार जी द्वारा बच्चों को ज्ञानशाला भेजने के लिए व उन्हें संस्कारी बनाने के लिए कुछ ज्ञानवर्धक बातें बताई।

सभा अध्यक्ष बच्छराज बेताला ने ज्ञानशाला में सेवा देने वाली प्रशिक्षिकाओं को साधुवाद दिया। मुनि डॉ० विमलेश कुमार जी द्वारा बच्चों को संस्कार ज्ञान के बारे में बताया। ज्ञानशाला के बच्चों ने 'बच्चों को भेजो ज्ञानशाला' नाटक पर प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला के भूतपूर्व सहयोगी जितेंद्र बैद ने ज्ञानशाला के बारे में कुछ जानकारी दी। ज्ञानशाला के छोटे बच्चों के द्वारा 'हमारी प्यारी पाठशाला' पर डांस किया गया।

ज्ञानशाला की वरिष्ठ प्रशिक्षिका संपत देवी विनायक, अखिल भारतीय अणुव्रत क्रेविटी में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले बच्चों को तेयुप द्वारा सम्मानित किया गया। ज्ञानशाला के प्रशिक्षिकाओं को तेरापंथ सभा, भुवनेश्वर द्वारा सम्मानित किया गया। ज्ञानशाला के सभी बच्चों को सम्मानित किया गया।

रोशन पुगलिया द्वारा इस कार्यक्रम का पूरा संचालन किया गया। मुख्य प्रशिक्षिका संतोष सेठिया द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया। बच्चों को अनुशासन में रखने के लिए संतोष चोरड़िया ने सहयोग दिया। कार्यक्रम को सुचारु रूप चलाने में तेयुप द्वारा नियुक्त सहयोगी व प्रशिक्षिकाओं ने अपना पूरा योगदान दिया। मुनिप्रवर के मंगल पाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

टालीगंज

टालीगंज क्षेत्र रानी कुठी में नई ४८वीं ज्ञानशाला का प्रारंभ हुआ। वृहद कोलकाता ज्ञानशाला की आंचलिक संयोजिका डॉ० प्रेमलता चोरड़िया, सह-संयोजक संजय पारख, समिति सदस्य मालचंद भंसाली, साउथ कोलकाता क्षेत्र के संयोजक प्रकाश दुगड़, कार्यकारिणी सदस्य पूजा पारख, वर्षा दुगड़ उपस्थित थी।

टालीगंज तेरापंथी सभा के अध्यक्ष अशोक पारख, मंत्री राजीव दुगड़, ज्ञानशाला संयोजक विनय सेठिया, मुख्य प्रशिक्षिका सरोज पारख, रानी कुठी ज्ञानशाला की प्रशिक्षिका सुषमा सुराणा, गरिया ज्ञानशाला की प्रशिक्षिका अर्चना बोथरा उपस्थित थीं। आंचलिक समिति सदस्य मालचंद द्वारा कार्यक्रम का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से किया गया। ज्ञानार्थी अच्छी संख्या में उपस्थित थे। अभिभावकों ने इस क्षेत्र में ज्ञानशाला प्रारंभ होने पर प्रशंसा व्यक्त की।

सभी प्रशिक्षिकाओं का मोमेंटो द्वारा सम्मान किया गया।

हैदराबाद

साध्वी त्रिशला कुमारी जी की प्रेरणा से तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद के तत्त्वावधान में हैदराबाद नगरत्रय में २१वीं ज्ञानशाला का शुभारंभ चैतन्यपुरी क्षेत्र में किया गया। इस नूतन ज्ञानशाला का विधिवत् उद्घाटन चैतन्यपुरी में स्थित आशीर्वाद हाइट्स अपार्टमेंट में तेरापंथ समाज के व वहाँ की सोसायटी के जाने-माने व्यक्तियों की उपस्थिति में किया गया।

कार्यक्रम में तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद के पदाधिकारी वर्ग में सहमंत्री राकेश सुराणा, धर्मेन्द्र चोरड़िया, ज्ञानशाला विभाग संयोजक सुनील बोहरा, नवीन दस्साणी व कमल बरमेचा तथा हुक्मीचंद कोटेचा सहित अन्य गणमान्यजनों की उपस्थिति रही।

मंचीय कार्यक्रम के अंतर्गत सर्वप्रथम गुरुदेव द्वारा उच्चारित मंगलपाठ की रिकॉर्डिंग सुनाई गई तत्पश्चात चैतन्यपुरी महिला समाज ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। आंचलिक संयोजक सीमा दस्सानी ने अंचल की २१वीं ज्ञानशाला के प्रारंभ पर बधाई दी। ज्ञानशाला सलाहकार अंजु बैद ने वर्तमान जीवनशैली व आधुनिक शिक्षण शैली में ज्ञानशाला जैसी संस्कृति व संस्कार देने वाली प्रवृत्ति की आवश्यकता पर बल दिया।

नूतन ज्ञानशाला में १५ बच्चों ने ज्ञानार्थियों के रूप में तथा ४ बहनों ने प्रशिक्षिकाओं के रूप में प्रवेश किया। स्वाति सुराणा, कुसुम बैंगानी, अंकिता संचेती व नम्रता सुराणा ने प्रशिक्षक के रूप में अपनी निस्वार्थ सेवाएँ प्रदान करने के लिए सहमति दी। कार्यक्रम का संचालन टीपीएफ सहमंत्री अणुव्रत सुराणा ने किया। रोशन सिसोदिया का सहयोग रहा।

कार्यक्रम के पश्चात संगीता गोलछा, कविता आच्छा व मुख्य प्रशिक्षक पुष्पा बरड़िया ने नए ज्ञानार्थियों को नमस्कार महामंत्र, ज्ञानशाला प्रतिज्ञा, ज्ञानशाला गीत का उच्चारण करवाया तथा ज्ञानशाला के नियमों व अनुशासन आदि की प्रेरणा दी।

खेल के माध्यम से भी ज्ञान-चेतना का विकास करें

बालोतरा।

धर्म, दर्शन, संस्कृति एवं वैश्विक तथ्यों के ज्ञान से भरी आरोहण प्रीमियर लीग एपीएल-२०२२ का आगाज बालोतरा के न्यू तेरापंथ भवन में मुनि मोहजीत कुमार जी के सान्निध्य में हुआ। आरोहण प्रीमियर लीग में विशाल प्रश्नों और उत्तरों की झलक का नया संसार नए स्वरूप में एवं नए आकार में देखने को मिला। तेयुप के तत्त्वावधान में तेरापंथ किशोर मंडल बालोतरा द्वारा आयोजित तीन दिवसीय उपक्रम में प्रथम दिन अग्रोक्त आठ टीमों ने भाग लिया। संस्कार सुपर जायंट्स, सद्गुण सुपर किंग्स, नंदन नाइट राइडर्स, कल्याण किंग्स, विनम्र वॉरियर्स, तत्त्वज्ञ टाईटंस, संगम सनराइजर्स, चिन्मय चैलेंजर्स। जिसमें से चार विजयी टीमों ने अगले दिन सेमी फाइनल में तथा दो सेमी फाइनल राउंड की विजेता टीम नंदन नाइट राइडर्स vs संगम सनराइजर्स ने फाइनल में अपनी ६०० प्रश्नोत्तरों की विशाल ज्ञानराशि को पिच पर प्रस्तुति दी।

इस खेल की पूरी थीम ज्ञान, रोमांच और जोश से भरी हुई थी। आईपीएल की तर्ज पर सुपर ओवर, गुगली, नो बॉल आदि अन्य नियम रखे गए। जिसमें चैंपियन बनी नंदन नाइट राइडर्स। टीम की कप्तान मनीषा ओस्तवाल ने पूरी टीम के सामूहिक प्रयास की सराहना की। प्लेयर ऑफ द टूर्नामेंट का खिताब प्रेरणा रेहड़ को मिला। सभाध्यक्ष धनराज ओस्तवाल, तेममं अध्यक्षा निर्मला संकलेचा, तेयुप अध्यक्ष संदीप ओस्तवाल आदि उपस्थित रहे।

इस अवसर पर मुनि मोहजीत कुमार जी ने कहा कि ऐसे उपक्रमों से ज्ञान चेतना का विकास किया जा सकता है। एपीएल-२०२२ की समायोजना में मुनि जयेश कुमार जी की विशेष भूमिका रही। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि यह लीग सभी प्रतिभागियों के ज्ञान के साथ ही पूरे बालोतरा समाज के विकास आरोहण की महत्त्वपूर्ण कड़ी साबित होगी।

इस लीग के संयोजन में विशिष्ट योगदान किशोर मंडल प्रभारी आशीष ओस्तवाल, संयोजक आदित्य भंसाली, उप-संयोजक पीयूष बालड़, पार्थ छाजेड़, अभिषेक संखलेचा, अर्हम खाटेड़, अक्षय मेहता, अखिल बाफना, रजत ओस्तवाल का रहा।

ज्ञान ज्योति कार्यशाला का आयोजन

साहूकारपेट, चेन्नई।

तेरापंथ भवन में साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी की प्रेरणा से जैन विश्व भारती संस्था से जैन दर्शन, जीवन-विज्ञान आदि में एम०ए० करने वाले एवं तत्त्वविज्ञ, तेरापंथ तत्त्व प्रचेता, जैन विद्याविज्ञ आदि शिक्षा प्राप्त भाई-बहनों के लिए ज्ञान ज्योति कार्यशाला का आयोजन किया गया।

'पीएँ ज्ञान का रस, जीवन बने सरस' विषय पर साध्वीश्री जी ने कहा कि वर्तमान ज्ञान संपदा के आदि स्तोत्र भगवान महावीर हैं। उनकी सर्वज्ञता के आलोक में सारा ज्ञान दृष्टिगम्य बनकर हमारे पास पहुँचा। उसके बाद गणधरों एवं आचार्यों ने ज्ञान राशि को अक्षुण्ण बनाए रखा। जैन परंपरा में सबसे बड़ी राशि चौदह पूर्वों में निहित है। ज्ञान की साधना आनंद प्राप्त कराती है। ज्ञान के क्षेत्र में तेरापंथ संघ ने सर्वोच्च विकास किया है।

साध्वीश्री जी ने कहा कि चेन्नई के ज्ञान पिपासु भाई-बहन जैन विद्वान बनने की दिशा में आगे बढ़े। साध्वी सुदर्शनप्रभा जी, साध्वी सिद्धियशा जी, साध्वी राजुलप्रभा जी, साध्वी चैतन्यप्रभा जी एवं साध्वी शौर्यप्रभा जी ने 'ज्ञान की ज्योत जलाएँ हम' गीत का संगान किया। तेरापंथ सभाध्यक्ष उगमराज सांड एवं मंत्री अशोक खतंग ने विचार व्यक्त किए।

कार्यशाला में साध्वी डॉ० राजुलप्रभा जी ने 'अंतर सांस्कृतिक शोध' विषय को प्रतिपादित किया। साध्वी डॉ० चैतन्यप्रभा जी ने कर्मवाद एवं साध्वी डॉ० शौर्यप्रभा जी ने स्थायी ज्ञान के टिप्स बताए।

अभातेममं की अध्यक्षा नीलम सेठिया ने कहा कि जिन्होंने भी अपने विषयों में दक्षता हासिल की है, वे अपने शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़कर जैन विद्वानों की पंक्ति में आने का प्रयास करें। कार्यक्रम का संचालन 'ज्ञान ज्योति कार्यशाला' के संयोजक महेंद्र सेठिया ने किया। कार्यक्रम में चेन्नई से अभातेममं कार्यकारिणी सदस्या दीपा पारख, चेन्नई तेममं उपाध्यक्षा गुणवंती खांटेड़, तेरापंथ सभा सहमंत्री देवीलाल हिरण, मनोज गादिया, उपासक पदम आंचलिया की उपस्थिति रही।

सेवा कार्य

विजयनगर।

तेयुप, विजयनगर द्वारा सेवा के उपक्रम के अंतर्गत मानव चैरिटिस आरपीसी लेआउट में प्रायोजक परिवार अमिता बैद धर्मपत्नी विजय कुमार बैद, बैंगलोर द्वारा मानसिक परेशानी वाले बच्चों की नाश्ते की व्यवस्था की। तेयुप के मंत्री राकेश पोखरना, कार्यकारिणी सदस्य देवांग बैद, विकास बेंगवानी, सेवाकार्य संयोजक दिनेश मेहता, बैद परिवार ने उपस्थित होकर बच्चों के सेवाकार्य में सहभागिता निभाई।

✦ *अज्ञान ऐसा अभिशाप है जो क्रोध, लोभ आदि से भी ज्यादा खतरनाक है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

आत्मा के आसपास

❑ आचार्य तुलसी ❑

प्रेक्षा : अनुप्रेक्षा

आचार्य तुलसी : जीवन परिचय

अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक

गुलामी की जंजीरों से मुक्त भारत देश को 'असली आजादी अपनाओ' का घोष देकर १ मार्च, १९४९ को आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया। जाति, संप्रदाय, प्रांत, वर्ण आदि से ऊपर उठकर नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा के उद्देश्य वाला यह अणुव्रत अभियान घर-घर, गली-गली, गाँव-गाँव और देश के कोने-कोने तक पहुँचा। अणुव्रत का प्रथम अधिवेशन दिल्ली में समायोजित हुआ। उस समय न्यूयार्क के सुप्रसिद्ध साप्ताहिक 'टाइम्स' (१५ मई, १९५०) की महत्त्वपूर्ण टिप्पणी से आचार्यश्री और अणुव्रत को अंतर्राष्ट्रीय ख्याति उपलब्ध हुई। अणुव्रत के माध्यम से आचार्य तुलसी ने व्यसन-मुक्ति, मानवीय एकता, राष्ट्रीय चरित्र निर्माण एवं विश्व-शांति की दिशा में उल्लेखनीय कार्य किया।

महान यायावर संत

जैनमुनि पदयात्री होते हैं। आचार्य तुलसी ने देशव्यापी पदयात्राएँ कीं। पंजाब से कच्छ तथा कोलकाता से कन्याकुमारी तक भारतभूमि को अपने कदमों से मापा। धर्मक्रांति, धर्म-समन्वय तथा नैतिक मूल्यों की प्रस्थापना के उद्देश्य से आचार्य तुलसी ने लगभग साठ-पैंसठ हजार किमी० की विस्मयकारी पदयात्रा की। इस क्रम में वे श्रमिक की झोंपड़ी से लेकर राष्ट्रपति भवन और संसद तक पहुँचे। इस दौरान उनका व्यापक जनसंपर्क हुआ। आम आदमी के साथ तो उनका संपर्क हुआ ही, वे देश के प्रख्यात साहित्यकारों, संतों और विशिष्ट व्यक्तियों से भी मिले। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त, रामधारीसिंह 'दिनकर' आदि कवि, जैनेंद्र कुमार जैसे साहित्यकार, जयप्रकाश नारायण, विनोबा भावे, काका कालेलकर आदि प्रख्यात राजनीतिज्ञ और डॉ० राजेंद्र प्रसाद, जवाहरलाल नेहरू, डॉ० राधाकृष्णन् जैसे मूर्धन्य नेताओं पर आचार्यश्री के व्यक्तित्व और विचारों का विशेष प्रभाव पड़ा।

धर्मक्रांति के पुरोधा

आचार्य तुलसी धर्मक्रांति के प्रखर पुरोधा थे। वे उपदेश की अपेक्षा प्रयोग में अधिक विश्वास करते थे। इसलिए प्रवचन सुनना, माला फेरना, पूजा करना, मंदिर जाना—इस अनुष्ठान-प्रधान धर्म को अभिनव वैज्ञानिक-प्रायोगिक रूप दिया। ग्रंथों और पंथों के दायरे से निकालकर उसे मानवता की वेदी पर प्रतिष्ठित किया। प्रामाणिकता, नैतिकता, संयम और अहिंसा-प्रधान मूल्यों को जीवनशैली के साथ जोड़ने का बोध दिया। उनके द्वारा प्रदत्त सर्वधर्मसद्भाव तथा धार्मिक सहिष्णुता का मंत्र विविध धर्मावलंबी भारतीय जनता के लिए सर्वदा अनुकरणीय है।

दलितों के मसीहा

क्रांतिकारी विचारों के धनी आचार्यश्री तुलसी का हृदय करुणा से आप्लावित था। फलतः गांधी की भाँति उन्होंने भी हरिजन-उद्धार और अस्पृश्यता-निवारण के लिए अनकथ प्रयास किया। संघर्षों की आँच में तपने के बावजूद आचार्य तुलसी ने दलितोत्थान कार्यक्रम को जारी रखा और युगधारा के प्रवाह को मोड़ दिया।

नारी जाति के उन्नायक

अशिक्षा, अंधविश्वास और सामाजिक कुरूढ़ियों से जर्जर आधी दुनिया में प्राण फूँकने के लिए आचार्य तुलसी ने 'नया मोड़' नाम से एक अभियान चलाया। इसके अंतर्गत पर्दा प्रथा, बाल विवाह, दहेज प्रथा, विधवाओं का नारकीय जीवन आदि का खुलकर प्रतिकार किया, जिससे ये सब कुरूढ़ियाँ मृतप्राय हो गईं। स्त्री-शिक्षा को प्रोत्साहन देकर उन्होंने नारी जाति में नए-नए उन्मेष पैदा किए।

साध्वी समाज की प्रबुद्धता और शैक्षिक प्रगति भी आचार्य तुलसी के सघन पुरुषार्थ की ही फलश्रुति है।

साहित्य एवं साहित्यकारों के सर्जक

आचार्यश्री बहुभाषी साहित्यकार थे। हिंदी, राजस्थानी और संस्कृत भाषा में उन्होंने शताधिक ग्रंथ लिखे। उनके द्वारा लिखित कालूयशोविलास राजस्थानी भाषा का उत्कृष्ट कोटि का महाकाव्य है। उसे पढ़ने वाले विद्वानों के अभिमत से वे महाकवि कालिदास से कम नहीं थे। आचार्यश्री की सृजन-चेतना का वैशिष्ट्य अपूर्व था। वे साहित्य के ही नहीं, साहित्यकारों के भी सर्जक थे। उन्होंने अपने धर्मसंघ में साहित्यकारों की एक लंबी कतार खड़ी कर दी, जिसमें आचार्य महाप्रज्ञ जैसे शिष्य भी शामिल थे।

जैन वाङ्मय के वाचनाप्रमुख

ढाई हजार वर्ष पूर्व महावीर ने त्रिपदी के माध्यम से जो सत्य दिया, गणधरों ने जिसका विस्तार किया, आचार्य तुलसी ने उस जैन वाङ्मय के संपादन का बीड़ा उठाया। सर्वप्रथम उज्जैन (१९५५) में उन्होंने इस अनुष्ठान की सिद्धश्री लिखी। उनके वाचनाप्रमुखत्व में आगमों पर वैज्ञानिक और असांप्रदायिक दृष्टि से विशद कार्य हुआ। आगम कार्य के जिस महान यज्ञ में आचार्यश्री ने पहली आहुति दी, वह आज भी आचार्यश्री महाश्रमण के सान्निध्य में अनवरत गति से चल रहा है। उन्होंने अपने जीवन में प्राथमिक रूप से करणीय कार्यों में आगम-संपादन को प्रथम पंक्ति में रखा और विशेष अवसरों के अतिरिक्त नियमित रूप से इस कार्य में समय का नियोजन किया।

(क्रमशः)

साँसों का इकतारा

❑ साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ❑

(१०५)

नई सदी का समय सामने नूतन फसल उगाओ।
हो निर्माण नए मानव का ऐसा पाठ पढ़ाओ।।

तुम चलते जब अपनी गति से काल चपल हो जाता
तुम रुकते तो थमता क्षण भी तुम गाते वह गाता
तुम मुसकाते उतरे भू पर मुसकानों का निर्झर
देख तुम्हारा मौन रोकना समय स्वयं अपने स्वर
अपनी ऊर्जा के प्रवाह से ऊर्जावान बनाओ।।

एक बार भी जो सुन लेता आर्य! तुम्हारा प्रवचन
भूल स्वयं को कर देता है अपना सब कुछ अर्पण
जटिल समस्या ले जीवन की सन्निधि में जो आता
बात-बात में अनायास ही समाधान वह पाता
भटक गए हैं जो मंजिल से उनको राह दिखाओ।।

कर तुमसे संवाद अजाने भी बन जाते अपने
उग आते उनकी आँखों में अनगिन अभिनव सपने
टिकती जहाँ तुम्हारी नजरें बदले वहाँ नजारे
अत्राणों के त्राण तुम्हीं अबलों के सबल सहारे
मझधारा में खड़ी नाव को अब तो पार लगाओ।।

(१०६)

जहं-जहं चरण टिके तुलसी के
वह पथ परम पुनीत हो गया।
जिस पर नजर टिकी तुलसी की
वह नर सरल विनीत हो गया।।

सूरज की उजली किरणों के
सरस परस से पुलकन पाकर
गुरु-दर्शन की प्यास बुझाने
नव उमंग में कदम बढ़ाकर
प्रतिदिन पहुँच प्रवास-स्थल पर
वंदन कर सुख-पृच्छा करते
आशीर्वाद हाथ से नयनों से
करुणा के निर्झर झरते
समासीन सन्निधि में कुछ पल
रहती सबको सदा प्रतीक्षा
विविध विधाओं में मिलता था
अनुपम संबल और समीक्षा
ऊर्जा से भर जाता मानस वह
युग आज अतीत हो गया।।

प्रवचनशैली बड़ी रसीली
जनता को मोहित कर लेती
पक्ष हेतु दृष्टांत तर्क से
मन के सब संशय हर लेती

आम खास हो कोई चाहे
सबको बोधपाठ मिल जाता
जादूगर थे सहज सुरों के
सुनकर हृदय-कमल खिल जाता
बहुश्रुतता की रसमय धारा
अभिस्नात करती जन-जन को
भूल नहीं पाता कोई भी
उनके अद्भुत अपनेपन को
तुलसी का हर बोल हमारे
जीवन का संगीत हो गया।।

योग विरोधों का जीवन में
नहीं कभी उनसे घबराए
संघर्षों से लोहा लेकर
कितने विजय-ध्वज फहराए
कदम-कदम पर शूल बिछे थे
हँसते-हँसते फूल खिलाए
तम का जाल बिछा था मग में
मोड़-मोड़ पर दीप जलाए
वत्सलभाव लुटाया इतना
रहा न कोई भी घट रीता
सौमनस्य की सुर-सरिता से
दूर-निकट सबका दिल जीता
भारत की क्या बात आज तो
विश्व समूचा मीत हो गया।।

(क्रमशः)

संबोधि

❑ **आचार्य महाप्रज्ञ** ❑

बंध-मोक्षवाद

मिथ्या-सम्यग्-ज्ञान-मीमांसा

भगवान् प्राह

(५१) यदा धूतं कर्मरजः भवत्यबोधिना कृतम्।
तदा सर्वगं ज्ञानं, दर्शनं चाऽभिगच्छति।।

जब मनुष्य अबोधि द्वारा संचित कर्मरज को प्रकंपित कर देता है तब वह सर्वत्र-गामी ज्ञान और दर्शन-केवलज्ञान और केवलदर्शन को प्राप्त कर लेता है।

(५२) यदा सर्वत्रगं ज्ञानं, दर्शनं चाभिगच्छति।
तदा लोकमलोकञ्च, जिनो जानाति केवली।।

जब मनुष्य सर्वत्र-गामी ज्ञान और दर्शन-केवलज्ञान और केवलदर्शन को प्राप्त कर लेता है तब वह जिन और केवली होकर लोक-अलोक को जान लेता है।

(५३) यदा लोकमलोकं च, जिनो जानाति केवली।
आयुषोऽन्ते निरुन्धानः, योगान् कृत्वा रजः क्षयम्।।

(५४) अनन्तामचलां पुण्यां, सिद्धिं गच्छति नीरजाः।
तदा लोकमस्तकस्थः, सिद्धो भवति शाश्वतः।। (युग्मम्)

केवलज्ञान की उपलब्धि होने पर जिन अथवा केवली लोक और अलोक को जान लेता है। वह आयु के अंत में मन, वचन और काय—तीनों योगों का निरोध कर, कर्मरज को सर्वथा क्षीण कर अनंत, अचल और कल्याणकारी सिद्धिगति को प्राप्त कर, शाश्वत सिद्ध होकर लोक के अग्रभाग में अवस्थित हो जाता है।

साधना का प्रथम चरण संयम है और अंतिम भी संयम है। जितने भी साधक हैं संयम उनके लिए अनिवार्य है, इसे यों भी कह सकते हैं कि साधना की चिंतन और उसकी क्रियान्विति संयम से अनुबंध है। संयम के अभाव में जीवन का कोई भी क्षेत्र सुखद, सफल नहीं होता। असंयम पारिवारिक, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक आदि सभी क्षेत्रों के लिए अभिशाप है। शारीरिक दृष्टि से भी असंयमी व्यक्ति स्वस्थ नहीं होता। स्वास्थ्य भी संयम सापेक्ष है। इसलिए यह उद्घोष मुखर हुआ कि **'संयमः खलु जीवनम्'** संयम ही जीवन है। इसका विपरीत असंयम मृत्यु है।

संयम का अर्थ है—निरोध। इसमें प्रवृत्ति और निवृत्ति दोनों का समन्वय है—असत् प्रवृत्ति का पिरोध और सत् में प्रवर्तन। सत् और असत् दोनों का संयम चेतना का पूर्ण विकास है। प्रस्तुत श्लोकों में इसी का दिग्दर्शन है। संयम के माध्यम से ही चेतना का विकास होता है। संयम पूर्ण विकास से पूर्व साधन के रूप में प्रयुक्त होता है और विकास की पूर्णता में साध्य बन जाता है। संयम की साधना के लिए जीव और अजीव के बोध की भी अपेक्षा है। इन्हें नहीं जानने वाला संयम को कैसे जान सकेगा? किसका संयम करेगा? कौन करेगा? क्यों करेगा?

पुरुष अलग है प्रकृति अलग है, किंतु दोनों के अनुबंध से संसार होता है। वैसे ही आत्मा और कर्म दोनों भिन्न-भिन्न होते हुए भी परस्पर में गहरे गूँथे हुए हैं। जब तक ये दोनों विभक्त नहीं होते तब तक संसार का प्रवाह, दुःख-सुख का चक्र, अधोगमन-ऊर्ध्वागमन की यात्रा निराबाध चलती रहती है। प्रकृति-कर्म के इस प्रवाह का अवरोध किए बिना सम्यग्ज्ञान की प्राप्ति कठिन है। अजीव की माया को समझना भी बहुत दुरूह है। अनेक ज्ञानी भी कर्म-जाल से सहजतया मुक्त नहीं हो सकते। 'विचित्रा कर्मणां गतिः' कर्म की गति बड़ी विचित्र है। कर्म का उदय उन्हें भी कहाँ से कहाँ ले जाकर छोड़ देता है। असंख्य उदाहरणों से यह संसार भरा है। आत्मा अनेक उतार-चढ़ाव, सुख-दुःखों की अनुभूति इसी के प्रभाव से करती है। जीव और अजीव की इस संस्कृति की समझ आवश्यक है। संयम की साधना में इनका बोध करणीय है।

(क्रमशः)

अवबोध

❑ **मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं'** ❑

धर्म बोध

शील धर्म

प्रश्न २० : जैनागमों में ब्रह्मचर्य की महिमा किस रूप में है?

उत्तर : जैनागमों में प्रश्नव्याकरण सूत्र में ब्रह्मचर्य की महिमा का हृदयग्राही वर्णन है। उसका कुछ अंश इस प्रकार है—'ब्रह्मचर्य व्रत सदा प्रशस्त, सौम्य, शुभ और शिव है। वह आत्मा की महान् निर्मलता है। वह प्राणी को विश्वसनीय बनाता है। उससे किसी को भय नहीं होता।'

'यह भूसी रहित धान की तरह सारवस्तु है। यह खेदरहित है। यह जीव को कर्म से लिप्त नहीं होने देता। चित्त की स्थिरता का हेतु है। तप-संयम का मूल तत्त्व है।' इसी सूत्र में बत्तीस उपमाएँ देकर ब्रह्मचर्य को विनय, शील, तप आदि सब गुण समूह में प्रधान बताया है।

(क्रमशः)

उपासना

(भाग - एक)

❑ **आचार्य महाश्रमण** ❑

आचार्य रायचंदजी

तेरापंथ धर्मसंघ के तृतीय आचार्य रायचंदजी 'ऋषिराय' के रूप में प्रसिद्ध हैं। उनका जन्म वि०सं० १८४७ को राजस्थान के उदयपुर संभाग में बड़ी रावलिया ग्राम में हुआ। उनके पिता का नाम शाह चतरोजी तथा माता का नाम कुशालांजी था। ग्यारह वर्ष की उम्र में सं० १८४७ चैत्र शुक्ला पूर्णिमा को उन्होंने अपनी माता के साथ आचार्य भिक्षु के पास दीक्षा ग्रहण की।

थोड़े ही समय में मुनि रायचंदजी ने आगमों का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया। अनेक सूत्र उन्हें कंठस्थ थे। धर्मचर्चा करने में भी वे बड़े निपुण थे। उनकी आवाज तेज थी एवं स्वर में माधुर्य था। कहते हैं कि जब वे व्याख्यान देते तो आस-पास के गाँवों तक उनकी आवाज सुनाई देती।

मुनि रायचंद जी आचार्य भिक्षु के अत्यंत विश्वासपात्र थे। आचार्य भिक्षु का सान्निध्य उन्हें कुल तीन वर्ष तक ही प्राप्त हुआ। द्वितीय आचार्य भारमलजी के भी वे उतने ही विश्वासपात्र बने रहे। अल्प समय में ही वे एक होनहार मुनि के रूप में प्रतिभासित होने लगे। संघ की आंतरिक व्यवस्था में उनका परामर्श लिया जाता।

वि०सं० १८७८ वैशाख कृष्णा नवमी को केलवा (मेवाड़) में आचार्य भारमलजी ने उन्हें युवाचार्य पद प्रदान किया। सं० १८७८ माघ कृष्णा नवमी को राजनगर में वे आचार्य पद पर आसीन हुए। उनका लंबा कद और ओजस्वी व्यक्तित्व दूसरों को शीघ्र ही प्रभावित करने वाला था। उनके युग में तपस्या की भी बहुत वृद्धि हुई।

आचार्य रायचंदजी देशाटन में अभिरुचि रखते थे। उन्होंने अपने जीवन में अनेक नए प्रदेशों की यात्राएँ कीं। उन यात्राओं से तेरापंथ के प्रसार में बहुत सहयोग मिला। गुजरात, सौराष्ट्र एवं कच्छ में सर्वप्रथम ऋषिराय ने ही पदार्पण किया। इससे पहले तेरापंथ का कोई साधु वहाँ नहीं गया था। आचार्य के रूप में मालव प्रदेश में जाने वाले सर्वप्रथम ऋषिराय ही थे। थली प्रदेश में तेरापंथ की सरिता को प्रवाहित करने का श्रेय सर्वप्रथम ऋषिराय को ही है। ऋषिराय के युग में तपस्या की भी बहुत वृद्धि हुई।

ऋषिराय बड़े निर्भीक वृत्ति के थे। वे अपनी बात इतने प्रभावशाली ढंग से कहते कि सामने वाला व्यक्ति नत हुए बिना नहीं रहता। एक बार वे मेवाड़ में विहार कर रहे थे। कुछ संत उनसे कुछ दूर चल रहे थे। उन दिनों वहाँ डाकुओं का काफी बोलबाला था। एक बार विहार में उनसे आगे चलने वाले साधुओं को कुछ घुड़सवार डाकू मिले। उन्होंने संतों को सामान नीचे रखने को कहा। संतों ने कहा—'हमारे पास कोई धन नहीं है। हम तो अपने पास मात्र आवश्यक वस्त्र, पात्र आदि रखते हैं।' इतने में एक घुड़सवार ने साधु के कंधे पर पड़े कंबल को लेने का प्रयत्न किया। उस साधु ने भी तत्काल कंबल को नीचे बिछाया और उस पर बैठ गया। डाकू घोड़े से नीचे उतरा और कंबल को साधु के नीचे से खींचकर निकालने लगा। ऋषिराय ने दूर से यह दृश्य देखा। तत्काल वहीं से 'हाकल' करते हुए उन्होंने कहा—'सारे गोले ही गोले इकट्ठे हुए हो या तुममें कोई राजपूत भी हैं?' ऋषिराय की तेज आवाज काफी दूर तक फैल गई। डाकू टोली का सरदार 'ठाकुर' थोड़ा पीछे चल रहा था। तत्काल आगे आया। तब तक ऋषिराय भी संतों के पास पहुँच चुके थे। ठाकुर ने आते ही पूछा—'क्यों महाराज! आपको राजपूत की आवश्यकता क्यों पड़ गई?' ऋषिराय ने कहा—'हमें कोई आवश्यकता नहीं पड़ी है। मैं तो जानना चाहता था कि इनमें कोई राजपूत है या नहीं? क्योंकि मेरा विश्वास है कि राजपूत अभी तक इतना पतित नहीं हुआ है जो संतों को भी लूटने का साहस करे।' ठाकुर ने ऋषिराय के चरणों में नमस्कार करते हुए अपनी गलती स्वीकार की। इतना ही नहीं, उसने अपने दो साथियों को संतों के साथ भेजा ताकि पीछे आते साथियों में से फिर कोई ऐसी गलती न कर बैठे।

ऋषिराय का शासनकाल तीस वर्ष का रहा। वि०सं० १९०८ का अंतिम चातुर्मास उनका उदयपुर में हुआ। उदयपुर में आस-पास के क्षेत्रों में विचरते हुए वे 'छोटी रावलिया' पधारे। वहाँ माघ कृष्णा चतुर्दशी के दिन सायं शौच के निमित्त बाहर जाते समय अचानक उन्हें श्वास का प्रकोप हुआ और उसी बीमारी में प्रतिक्रमण के पश्चात् वे सदा के लिए इस संसार से विदा हो गए।

ऋषिराय के शासनकाल में कुल दो सौ पैंतालीस दीक्षाएँ हुईं। उनमें सतहत्तर साधु और एक सौ अड़सठ साध्वियाँ थीं। **(क्रमशः)**

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
14 - 20 नवंबर, 2022

✦ *परिश्रम सही दिशा में हो, सफल हो, इसके लिए किसी कार्य को करने से पूर्व मन में दो प्रश्न उठने चाहिए–'क्यों' और 'कैसे'?*
–आचार्यश्री महाश्रमण

नि:शुल्क सार्वजनिक होम्योपैथिक चिकित्सालय का शुभारंभ

राजलदेसर।

तेरापंथ भवन, मैन बाजार में नि:शुल्क सार्वजनिक होम्योपैथिक चिकित्सालय का उद्घाटन हुआ। बड़ी संख्या में समाज एवं गाँव के गणमान्यों की उपस्थिति में वरिष्ठ समाजसेवी सूरजमल घोषल एवं अनिल बैद ने चिकित्सालय का विधिवत शुभारंभ किया।

साध्वी मंगलप्रभा जी की सहवर्तिनी साध्वियाँ साध्वी समप्रभा जी एवं साध्वी प्रणवप्रभा जी पधारे एवं मंगलपाठ का श्रवण कराया। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष विमल सिंह दुधेड़िया ने बताया कि डॉ० भागीरथ खीचड़ प्रत्येक रविवार को चिकित्सालय में सेवाएँ देंगे। उन्होंने बताया कि नि:शुल्क होम्योपैथिक चिकित्सालय में चिकित्सकीय परामर्श के साथ दवा भी नि:शुल्क दी जाएगी।

इस अवसर पर सभा के ट्रस्टी पन्नालाल दुगड़, उपाध्यक्ष राजकुमार विनायकिया, कोषाध्यक्ष मनोज घोषल, नरेंद्र बैद, सुनील बैद, चुन्नीलाल घोषल, विजय सिंह घोषल, राजेश घोषल, सुशील घोषल, भैरूदान गिड़िया, कमल कोठारी सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही। इस अवसर पर डॉ० खीचड़ ने २५ से अधिक रोगियों की जाँच कर उन्हें दवाइयाँ दी। तेरापंथी सभा की तरफ से अनिल बैद, सुनील बैद एवं डॉ० खीचड़ का सम्मान किया गया।

चित्त समाधि ध्यान शिविर

आमेट।

तेरापंथ भवन में साध्वी प्रांजलप्रभा जी के निर्देशन में एक दिवसीय चित्त समाधि ध्यान शिविर का आयोजन किया गया। यह शिविर ५० वर्ष से अधिक उम्र के बुजुर्ग पुरुष व महिलाओं के लिए आयोजित किया गया।

शिविर में सम्मिलित हुए ७५ से अधिक शिविरार्थियों को संबोधित करते हुए साध्वीश्री जी ने कहा कि व्यक्ति ढलती उम्र के साथ किस प्रकार का जीवन जीए, यह महत्त्वपूर्ण है। वृद्धावस्था में जीवन शैली कैसी हो, इसको प्रतिपादित करते हुए साध्वीश्री जी ने कहा कि इस उम्र में शारीरिक एवं मानसिक परिवर्तन होते हैं। यदि हम स्वयं को इन परिवर्तनों के अनुरूप ढालने का प्रयास करेंगे तो हर क्षण खुशहाली के साथ व्यतीत हो सकता है।

साध्वीश्री जी ने कई ऐसे प्रयोग भी करवाए जिनको प्रतिदिन करने से मानव उम्र के इस पड़ाव में भी अपनी युवावस्था को जीवित रख सकता है।

इस शिविर में प्रेक्षा प्रशिक्षक मिश्रीलाल चौधरी ने योग, प्राणायाम एवं ध्यान के साथ विभिन्न प्रयोग करवाए। उपासक शांतिलाल छाजेड़ ने भी अपने वक्तव्य से एवं छोटे-छोटे प्रयोग द्वारा चित्त समाधि के गुण सिखाए।

साध्वी गौतमप्रभा जी ने शिविरार्थियों को कायोत्सर्ग का प्रयोग करवाए। शिविर में तेरापंथ सभा अध्यक्ष देवेंद्र मेहता, मंत्री ज्ञानेश्वर मेहता, कोषाध्यक्ष अशोक पितलिया, तेयुप के अध्यक्ष पवन कच्छारा, मंत्री विपुल पितलिया का सराहनीय सहयोग रहा। शिविर का समापन साध्वीश्री जी के मंगलपाठ एवं आभार ज्ञापन सभा मंत्री ज्ञानेश्वर मेहता ने किया।

कंठी तप तपस्या का तप अभिनंदन समारोह

वसई।

साध्वी सरलप्रभा जी के सान्निध्य में कंठी तप तपस्या का तप अभिनंदन समारोह आयोजित हुआ। नालासोपारा से दिव्या लक्ष्मीलाल मेहता ने कंठी तप की तपस्या पूर्ण की। साध्वी प्रज्ञाश्री जी ने कहा कि नालासोपारा ने तपस्या में जो योगदान दिया संघ की गरिमा बढ़ाई, तपस्या के क्षेत्र में पूरे चोखले में सेवा भाव में नालासोपारा जीत रहा है।

साध्वी विनयप्रभा जी, साध्वी प्रतीकप्रभा जी ने गीतिका की प्रस्तुति दी। साध्वी सरलप्रभा जी ने तपस्या की महिमा पर सास-बहू पर आधारित एक लघुकथा से विस्तार से बताया।

गुरुदेव का संदेश वाचन संतोष मेहता ने किया। अंजू धाकड़, भाविका धाकड़, सभा अध्यक्ष लक्ष्मीलाल मेहता, विकास सुराणा, उपासिका बहन लक्ष्मी मेहता, मानसी मेहता, सोनल मेहता, रवीना बाफना, वसई महिला मंडल आदि ने गीतों एवं भावों की प्रस्तुति दी।

आंचल ढालावत ने कन्या मंडल के बारे में जानकारी दी। वसई सभा अध्यक्ष प्रकाश संचेती ने अपने विचार रखे। नालासोपारा सभा मंत्री पारस बाफना ने पूरे समाज की तरफ से तपस्या की अनुमोदना की, जितेश हिरण ने तप पर विश्लेषण डाला। कार्यक्रम का संचालन सुनीता हिरण ने किया।

आत्म शुद्धि की अद्भुत प्रक्रिया है तपस्या

उधना।

साध्वी लब्धिश्री जी के सान्निध्य में तप अभिनंदन का आयोजन किया गया। जिसमें ८० तपस्विनी भाई-बहनों के नाम आए जिसमें मासखमण के २, पखवाड़ा के ६ एवं ८ से ११ की तपस्या वाले ७१ थे। मंगलाचरण ज्ञानशाला द्वारा किया गया।

इस अवसर पर साध्वीश्री जी ने कहा कि तपस्या अंतरयात्रा का मार्ग है। तपस्या के द्वारा हम अपने कर्मों का क्षय कर सकते हैं। तपस्या करने वाले सभी साधुवाद के पात्र हैं। साध्वीश्री जी ने कहा कि तपस्या करना बड़ा कठिन है, फिर भी जिन्होंने की है उन्होंने अपने कर्मों की निर्जरा की है।

सभा अध्यक्ष बसंतीलाल नाहर ने स्वागत वक्तव्य दिया। सभी तपस्वियों का स्वागत किया। महिला मंडल की ओर से अध्यक्ष जस्सु बाफना व तेयुप की ओर से मंत्री उत्कर्ष खाब्या ने अपनी भावनाएँ व्यक्त की। कन्या मंडल व किशोर मंडल द्वारा गीत का संगान किया गया। तप अभिनंदन में ७० तपस्वी उपस्थित थे। सभी का दुपट्टे एवं अभिनंदन पत्र द्वारा सम्मान किया गया।

तेरापंथी सभा, तेमम व तेयुप का सराहनीय सहयोग रहा। तप अभिनंदन समारोह के संयोजक विनोद भटेवरा और नेमीचंद कुकड़ा ने अच्छी संयोजना की। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री सुरेश चपलोत ने किया।

✦ *व्यक्ति यह ध्यान दे कि जीवन में बुराइयाँ न पनपें और जो बुराइयाँ जीवन में प्रवेश कर चुकी हैं, उन्हें छोड़ने का प्रयास करना चाहिए।*
– आचार्यश्री महाश्रमण

अच्छी आदत से होता है, अच्छे भविष्य का निर्माण

माधावरम्, चेन्नई।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ माधावरम् ट्रस्ट, चेन्नई के तत्त्वावधान में मुनि सुधाकर कुमार जी के सान्निध्य में 'चेंज योर हैबिट, चेंज योर लाइफ' विषय पर सेमिनार का आयोजन किया गया। जिसमें अतिथि के रूप में भारतीय प्राशासिक अधिकारी एवं महामहिम राज्यपाल के मुख्य सचिव आनंद राव विष्णु पाटिल, अभातेममं की अध्यक्षा नीलम सेठिया, अभातेयुप के वरिष्ठ उपाध्यक्ष रमेश डागा ने भाग लिया।

मुनि सुधाकर कुमार जी ने कहा कि अभ्यास और साधना से जीवन में सुधार और बदलाव संभव है। जो पापी और दुर्बल मनोबल वाला व्यक्ति होता है, वह भी नियमित अभ्यास के द्वारा अपने विचार और व्यवहार को पवित्र और सुंदर बना सकता है।

राज्यपाल के मुख्य सचिव आनंद राव विष्णु पाटिल ने अपने प्रशासनिक अनुभव का उल्लेख करते हुए कहा कि जैन साधना पद्धति के माध्यम से अपनी नकारात्मक आदतों का हम परिष्कार कर सकते हैं। भगवान की शक्ति पर विश्वास एवं दृढ़-इच्छा से जीवन में परिवर्तन संभव है।

अभातेममं की अध्यक्षा नीलम सेठिया ने कहा कि आदत में बदलाव के संकल्प से पूर्व आत्म-निरीक्षण करना अनिवार्य है। हम चित्त, मन एवं बुद्धि के द्वारा पहले अपनी अच्छी या बुरी आदतों को समझने का प्रयास करें।

अभातेयुप के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रमेश डागा ने कहा कि आप अपनी दृष्टि के माध्यम से बुरी आदतें भी छोड़ सकते हैं एवं अच्छी आदत अपना भी सकते हैं। आपका दृष्टिकोण तय करता है, आप जीवन में किस रास्ते पर आगे बढ़ सकते हैं।

कार्यक्रम की शुरुआत मंडल की बहनों ने मंगलाचरण से किया। स्वागत भाषण ट्रस्ट के प्रबंध न्यासी घीसूलाल बोहरा ने दिया। मुनि नरेश कुमार जी ने गीतिका का संगान किया। इस अवसर पर कार्यक्रम के प्रायोजक कमलाबाई, माणकचंद, राकेश, संजय, मुकेश आच्छा परिवार का सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन प्रेक्षिता संकलेचा ने किया।

विजय दशमी पर्व के आयोजन

नाथद्वारा

शासनश्री मुनि रविंद्र कुमार जी के सान्निध्य में विजय दशमी पर्व मनाया गया। मुनि अतुल कुमार जी ने कहा कि रावण को हराने के लिए पहले खुद राम बनना पड़ता है। विजयदशमी यानी आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि जो कि विजय का प्रतीक है। वो विजय जो श्रीराम ने पाई थी रावण पर।

मुनिश्री ने कहा कि रावण जो की प्रतीक है बुराई का, अहंकार का, अधर्म का, आज तक जीवित इसलिए है कि हम उसके प्रतीक, एक पुतले को जलाते हैं न कि उसे। जबकि अगर हमें रावण का सच में नाश करना है तो हमें उसे ही जलाना होगा, उसके प्रतीक को नहीं। वो रावण जो हमारे ही अंदर है लालच के रूप में, झूठ बोलने की प्रवृत्ति के रूप में, अहंकार के रूप में, स्वार्थ के रूप में, वासना के रूप में, आलस्य के रूप में–ऐसे कितने ही रूप हैं, जिनमें छिपकर रावण हमारे ही भीतर रहता है। हमें इन सभी को जलाना होगा। इसका नाश हम कर सकते हैं, हमें ही करना भी होगा। जिस प्रकार अंधकार का नाश करने के लिए एक छोटा-सा दीपक ही काफी है उसी प्रकार हमारे समाज में व्याप्त इस रावण का नाश करने के लिए एक सोच ही काफी है।

मुनि रविंद्र कुमार जी ने मंगलपाठ सुनाया। कार्यक्रम में अच्छी संख्या में लोग उपस्थित थे।

चंडीगढ़

विजयदशमी का त्योहार पूरे भारतवर्ष में धूमधाम से मनाया जा रहा है, लेकिन जरूरत बाहर के रावण को मारने की नहीं, बल्कि मन के रावण को मारने की है, जो क्रोध, लालच, वासना का भरा हुआ है। भीतर के पुरुषोत्तम को जगाने का अनुष्ठान विजयदशमी है। यह शब्द मुनि विनय कुमार जी 'आलोक' ने विजयदशमी के अवसर पर कहे।

मुनिश्री ने आगे कहा कि विजयदशमी सिर्फ एक पर्व नहीं, बल्कि यह प्रतीक है झूठ पर सच्चाई की जीत का, साहस का, निःस्वार्थ सहायता का और मित्रता का, बुराई पर अच्छाई की हमेशा जीत होती है, इस बात को समझाने के लिए दशहरे के दिन रावण के प्रतीकात्मक रूप का दहन किया जाता है।

मुनिश्री ने कहा कि दशहरा बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है। जो हमें यह संदेश देता है कि बुराई कितनी भी बड़ी और ताकतवर क्यों न हो, मगर अच्छाई के सामने वह बहुत छोटी और कमजोर है।

मंगलभावना समारोह के आयोजन

जाटाबास, जोधपुर

शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में सभा के तत्त्वावधान में मंगलभावना समारोह आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री जी के नमस्कार महामंत्र से हुआ। मंगलाचरण सभा के मंत्री दिलीप मालू एवं मुकेश चौधरी ने किया।

स्वागत भाषण सभाध्यक्ष पन्नालाल कागोत ने दिया एवं साध्वियों के प्रति मंगलभावना प्रस्तुत की।

साध्वी कुंथुश्री जी ने कहा कि 'विहार चरिया इसिणं पसत्था'। साधुओं की विहार चरिया प्रशस्त होती है, संत विचरण करते अच्छे लगते हैं।

आज का दिवस आत्मनिरीक्षण, आत्मपरीक्षण, आत्मावलोकन का दिन है। चातुर्मास में क्या खोया, क्या पाया, नया क्या प्राप्त हुआ। कितना ग्रहण किया, कितना विकास किया, चिंतन करें। हमें कुछ होना है, एक लक्ष्य निर्धारित हो, लक्ष्य सदैव उन्नत होना चाहिए। कषायों का शमन करना ज्ञान दर्शन चारित्र में आगे बढ़ना। लक्ष्य के प्रति पूर्ण समर्पित होना अपेक्षित है।

जोधपुर का चातुर्मास आशातीत सफल रहा। यह परमपूज्य गुरुदेव का पुण्य प्रताप है, हमें उनकी प्रेरणा पाथेय प्राप्त होता रहता है।

समस्त श्रावक समाज, तेरापंथी सभा, तेयुप, तेममं, कन्या मंडल आदि सभी संस्थाओं के पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की सक्रियता, जागरूकता, सेवा, श्रद्धा, समर्पण, विनम्रता इंगित को समझकर कार्य करने वाले, सभी के पूर्ण सहयोग से चातुर्मास सफल रहा।

साध्वी सुमुगलाश्री जी ने श्रावकों की भावाभिव्यक्ति का उल्लेख किया।

तेममं अध्यक्षा हेमलता गेलड़ा, मंत्री रीना चौधरी, तेयुप अध्यक्ष मितेश जैन, सभा के पूर्व मंत्री महेंद्र सुराणा, अणुव्रत समिति के पूर्व अध्यक्ष सुरेंद्र गेलड़ा, तेयुप के पूर्व अध्यक्ष तरुण समदड़िया आदि वक्ताओं ने विचारों की प्रस्तुति दी। महिला मंडल ने गीतिका का संगान किया।

कार्यक्रम का संचालन मुकेश चौधरी ने किया।

कांदिवली

साध्वी निर्वाणश्री जी के कांदिवली में चातुर्मास की संपन्नता पर एसटीएमएफ, तेरापंथ सभा, तेयुप, तेममं आदि संघीय संस्थाओं द्वारा मंगलभावना समारोह आयोजित किया गया। कांदिवली तेरापंथ भवन का विशाल प्रेक्षागृह तो कुछ देर में ही बहुत छोटा पड़ गया, जिसे जहाँ स्थान मिला वहाँ बिना चेयर के ही भाई-बहन बैठकर, साध्वीश्री जी के प्रति श्रद्धावनत् होते गए। मंगलभावना समारोह का नया कीर्तिमान रच गया।

इस अवसर पर मुंबई सभा के कार्याध्यक्ष नवरतन गन्ना, पूर्वाध्यक्ष नरेंद्र तातेड़, एसटीएमएफ के अध्यक्ष विनोद, टीपीएफ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मनीष कोठारी, तेममं, मुंबई की अध्यक्ष रचना हिरण, एसटीएमएफ के पूर्व अध्यक्ष के०एल० परमार, मंत्री बाबूलाल राठौड़, गोरेगाँव सभाध्यक्ष चतरमल सिंघवी, मलाड़ के इंद्रचंद कच्छारा, दहिसर, बोरिवली, मलाड़, अलिका नगर आदि से बहनों ने तथा तेयुप, कांदिवली व मलाड से नवनीत कच्छारा, विनीत सिंघवी, मनोज लोढ़ा, गौतम भंडारी, योगेश कोठारी, रवि मालू, कांदिवली की संयोजिका नीतू नाहटा व सह-संयोजिका अलका पटावरी, निशा दुगड़, अंधेरी ईस्ट व वेस्ट से तेजल डोसी व निशा डोसी, कांदिवली से स्नेहलता चोरड़िया, विमला दुगड़ आदि ने साध्वीश्री जी के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व की विशेषताओं का उल्लेख किया।

साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभा जी ने कहा कि उजली भोर का संदेश लेकर साध्वीश्री यहाँ पधारी। सुबह का उजला प्रकाश देकर प्रस्थान कर रही हैं।

साध्वी लावण्यप्रभा जी, साध्वी कुंदनयशा जी, साध्वी मुदितप्रभा जी, साध्वी मधुरप्रभा जी ने गीत से समा बांधा। संचालन सभाध्यक्ष पारस दुगड़ ने किया।

इस अवसर पर तेजस एवं जितेंद्र कुमार बैद तथा स्थानीय तेयुप ने एक-एक पीपीटी के माध्यम से चातुर्मासिक काल की झलकियाँ दिखाई तथा न्यूज बुलेटिन की प्रस्तुति कांदिवली तेममं व कन्या मंडल ने दी।

जैन वाङ्मय कार्यशाला शृंखला का आयोजन एवं समापन समारोह

अहमदाबाद।

तेममं के तत्त्वावधान में विभिन्न जैन वाङ्मय कार्यशाला शृंखलाओं का आयोजन मुनि कुलदीप कुमारजी के सान्निध्य में व मुनि मुकुल कुमारजी के निर्देशन में तेरापंथ भवन, शाहीबाग आयोजित की गई। जिसमें निम्नलिखित जैन वाङ्मय कार्यशालाओं का विविध विषयों पर आयोजन किया गया।

(१) जैन वाङ्मय मंत्र दर्शन कार्यशाला विषय–'नमस्कार महामंत्र - एक दिव्यौषधी - एक रहस्य', (२) जैन वाङ्मय रंग चिकित्सा कार्यशाला विषय - रोगों की रामबाण दवा, (३) जैन वाङ्मय स्वर प्रेक्षा कार्यशाला विषय– 'अध्यात्म का उत्तुंग शिखर - स्वर विज्ञान', (४) जैन वाङ्मय वास्तु परिमल कार्यशाला विषय–'जैन आगमों में वास्तु का स्वरूप', (५) जैन वाङ्मय अध्यात्म नवनीत कार्यशाला विषय–'जैन आगमों में छिपी मंत्रों की रहस्यमयी शक्ति', (६) जैन वाङ्मय बोधिदा कार्यशाला विषय–'आठ कर्म और नवग्रह- एक विलक्षण विवेचन', (७) जैन वाङ्मय अप्पदीभव कार्यशाला विषय–'जैन ज्योतिष और वास्तु के रहस्यमयी सूत्र', (८) जैन वाङ्मय पंचतत्व कार्यशाला विषय–'यंत्र रहस्य और रंग चिकित्सा' (९) जैन वाङ्मय आत्मप्रबोधक आभामंडल कार्यशाला विषय–'ज्योतिष विद्या एक अलौकिक यात्रा', (१०) जैन वाङमय ज्योतिर्मय कार्यशाला विषय–'जीवन के रहस्यमय सूत्र' पर आयोजित की गई।

मुनि मुकुल कुमारजी ने वास्तु शास्त्र की चार प्रमुख दिशाएँ, आठ सहयोगी दिशाएँ ओर सोलह गुप्त दिशाओं के बारे में विलक्षण जानकारी दी। जैन आगमों में वास्तु का क्या स्वरूप है, दिशाएँ क्या है ओर उसका स्वरूप क्या है, वास्तु हमें कैसे प्रभावित करता है, जैनदर्शन, वैदिकदर्शन और बौद्धदर्शन में वास्तु का तुलनात्मक विवेचन किया।

तेरापंथी सभा, तेयुप, तेममं, टीपीएफ, अणुवत समिति आदि संस्थाओं के पदाधिकारियों के साथ अहमदाबाद के विभिन्न क्षेत्रों से अनेक श्रावकों, गणमान्यजनों एवं जैनेत्तर लोगों की भी उपस्थिति दर्ज रही।

कार्यशाला के समापन कार्यक्रम तेममं की बहिनों द्वारा मंगलाचरण किया गया। तेममं अध्यक्षा चांददेवी छाजेड़ ने स्वागत वक्तव्य दिया।

तेममं मंत्री अनिता कोठारी ने संचालन के साथ मुनिश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए सभी के प्रति आभार ज्ञापित किया।

✦ *शरीर और आत्मा–इन दो तत्त्वों का संयोग जीवन, इनका वियोग मृत्यु तथा इन दोनों का हमेशा के लिए अलग-अलग हो जाना मोक्ष है।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

त्रिदिवसीय संस्कार निर्माण शिविर

देशनोक।

मुनि आकाश कुमार जी के सान्निध्य में देशनोक तेरापंथ भवन में त्रिदिवसीय संस्कार निर्माण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में प्रथम दिन मानव सिंधी ने 'ज्योतिष' के विषय में जानकारी दी।

रात्रि में सूरत से समागत मोटिवेशनल स्पीकर भव्य बोथरा ने प्रस्तुति दी। जैन संस्कारक टीम से अंकुर लुणिया, औरंगाबाद ने बच्चों को जैन संस्कार विधि से सामाजिक कार्यक्रम को संपादित करने के बारे में जानकारी दी।

शिविर के दूसरे दिन कन्या मंडल की सदस्या निकिता बोरड़ (चाइल्ड काउंसलर) ने मनोविज्ञान के बारे में जानकारी दी।

रात्रि में तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा २५ बोल की प्रतियोगिता का सेमीफाइनल व फाइनल राउंड रखा गया। सूरत से समागत नीलेश बाफना ने अपने गीतों के द्वारा सभा को भक्तिरस से सराबोर कर दिया।

शिविर के तीसरे दिन 'साधु चर्या' कार्यक्रम रखा गया। जिसमें बच्चों ने साधु वेश धारण किया। कुल ६ बालक एवं ८ बालिकाओं ने इसमें हिस्सा लिया।

रात्रि में ज्ञानशाला, किशोर मंडल, कन्या मंडल द्वारा परिसंवाद रखा गया। परिसंवाद में जैन संस्कार एवं तेरापंथ धर्मसंघ के अब तक के हुए विकास की झाँकी दिखाई गई। कार्यक्रम का संयोजन नयनतारा नाहर ने किया।

शिविर के तीनों ही दिन ध्यान के प्रयोग मुनि आकाश कुमार जी एवं योग अनिल कुमार बैद ने करवाया।

उत्सव रिश्तों का, प्रेम देवरानी-जेठानी का

तेजपुर।

समणी निर्देशिका मधुरप्रज्ञा जी, समणी शुभप्रज्ञा जी व समणी मननप्रज्ञा जी का पावन प्रवास तेजपुर में हुआ। आपश्री का यह पावन प्रवास तेजपुर के श्रावक समाज में अध्यात्म की लौ को पुनः प्रज्वलित करने वाला था।

इस अवसर पर समणी निर्देशिका मधुरप्रज्ञा जी के सान्निध्य में तेरापंथ महिला मंडल ने अभातेयुप के निर्देशानुसार 'उत्सव रिश्तों का, प्रेम देवरानी-जेठानी का' कार्यक्रम आयोजित किया। सभा के निर्देशन में तेजपुर ज्ञानशाला द्वारा एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें ज्ञानशाला के बच्चों ने अपनी प्रस्तुति दी। इन आठ दिनों के प्रवास में समणी मधुरप्रज्ञा जी ने अपने प्रवचन में मनुष्य भव की उपयोगिता, सम्यक्त्व प्राप्ति के मार्ग, लोगस्स पाठ की सारगर्भिकता, व्याख्या आदि के माध्यम से श्रावक-श्राविकाओं को लाभान्वित किया। इच्छुक साधकों को तत्त्वों के बारे में जानकारी दी।

प्रवचन के दोनों समय ही श्रोतागणों की उपस्थिति अच्छी रही। रात्रिकालीन प्रवचन में अंत्याक्षरी, आध्यात्मिक प्रश्नोत्तरी व महिला मंडल की बहनों से पंचासार का नाटक करवाया। नाटक के माध्यम से जनता को ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप और वीर्य के विषय में सटीक जानकारी मिली। समणीवृंद का यह प्रवास तेजपुरवासियों के लिए यादगार बन गया।

हृदय रोग और प्रेक्षाध्यान पर कार्यशाला

भिलोड़ा।

डॉ० मुनि मदन कुमार जी के सान्निध्य में भिलोड़ा के महावीर भवन में हृदय रोग और प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन किया गया। अहमदाबाद से डॉ० धवल दोशी और जयपुर से डॉ० मुकेश जैन ने प्रभावी वक्तव्य दिए।

इस अवसर पर मुनि मदन कुमार जी ने कहा कि भोजन में संयम, आवेश, नियंत्रण और श्रमशीलता से स्वस्थ जीवन जीया जा सकता है। भावात्मक स्वास्थ्य से जीवन में शांति का अवतरण किया जा सकता है। इस दृष्टि से प्रेक्षाध्यान पद्धति रामबाण औषधि है। दीर्घश्वास प्रेक्षा और कायोत्सर्ग को साधकर हृदय-रोग जैसी भयावह बीमारी से बचा जा सकता है।

मुनि मदन कुमार जी ने कहा कि ध्यान और योग श्रेष्ठ औषधि है। जीवन में तप का आलंबन भी लेना चाहिए। डॉ० धवल दोशी ने कहा कि कोलेस्ट्राल और मोटापे से परहेज करना चाहिए तथा आलस्य और नशे की प्रवृत्ति को छोड़ना चाहिए।

डॉ० मुकेश जैन ने कहा कि आँख पाँख है। आँखों की सुरक्षा और दृष्टि दान दोनों जरूरी है। मुनि सिद्धार्थ कुमार जी ने चिकित्सकों का परिचय देते हुए उनकी आध्यात्मिक सेवाओं को मूल्यवान बताया। सभा अध्यक्ष महावीर चावत, मंत्री बाबूलाल दक, रेखा भटेवरा आदि ने उद्गार व्यक्त किए।

✦ *प्रथम कोटि के कार्यकर्ता निष्काम सेवा देने वाले होते हैं। नाम, ख्याति की आकांक्षा साधना की दृष्टि से भी बाधक है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

मेधावी छात्र सम्मान समारोह का आयोजन

कांटाबाजी।

मुनि प्रशांत कुमार जी के सान्निध्य में टीपीएफ द्वारा मेधावी छात्र सम्मान समारोह आयोजित हुआ। मुनिश्री ने कहा कि जितने भी तीर्थंकर हुए हैं वे कषायमुक्त हुए हैं। तीर्थंकर विकारों से मुक्त होते हैं, इसलिए उनका जीवन शांतिमय होता है। उनके पास जाने से, बैठने से आत्मिक शांति मिलती है। वे धर्म के प्रवर्तक होते हैं। धर्म के प्रतीक पुरुष होते हैं।

टीपीएफ तेरापंथ धर्मसंघ की महत्त्वपूर्ण संस्था है, केंद्रीय संस्था का दर्जा दिया गया है। संगठित संस्था है, सभी प्रोफेशनल हैं। गुरुदेव ने फरमाया कि टीपीएफ मोतियों की माला है। सात्त्विक गौरव है कि अपने-अपने क्षेत्र में बहुत कार्य कर रही है।

मुनि कुमुद कुमार जी ने कहा कि जीवन में ज्ञान का महत्त्व तभी होता है जब वह ज्ञान जीवन में उपयोगी बनता है। शिक्षित, प्रबुद्ध व्यक्ति अपराधिक प्रवृत्ति में लिप्त हो तो शिक्षा का प्रश्न चिह्न लगता है। ज्ञान जीवन को संस्कारित बनाता है। ज्ञान से पारिवारिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक संस्कार के साथ जीवन जीने का प्रायोगिक शिक्षण प्राप्त होता है।

मीडिया प्रभारी अविनाश जैन ने बताया कि टीपीएफ अध्यक्ष विनोद जैन ने स्वागत भाषण दिया। मुस्कान इंटरनेशनल स्कूल के चेयरमैन ब्रिजेश मित्तल ने टीपीएफ की गतिविधियों का उल्लेख करते हुए मुख्य बिंदुओं पर चर्चा की। आभार ज्ञापन टीपीएफ के कोषाध्यक्ष सुनील जैन ने किया। कार्यक्रम का संचालन टीपीएफ मंत्री अनुपमा जैन ने किया। कांटाबाजी टीपीएफ ने मेधावी छात्राओं को पदक एवं प्रमाण-पत्र से सम्मानित किया।

महाप्रज्ञ अलंकरण दिवस

पाली।

स्कूलों में 'महाप्रज्ञ अलंकरण दिवस' के त्रिदिवसीय कार्यक्रम के संदर्भ में प्रार्थना सभा में जीवन-विज्ञान के दौरान ताड़केश्वर रामेश्वर-सरस्वती बालिका उ०मा० विद्यालय की बालिकाओं को संबोधित करते हुए मुनि तत्त्वरुचि जी 'तरुण' ने कहा कि भारतीय संस्कृति भोग प्रधान नहीं, त्याग प्रधान है। अतः जीवन-विज्ञान शिक्षा प्रणाली के द्वारा देश के भावी कर्णधारों में त्याग के संस्कारों का बीजारोपण होना चाहिए।

भोग जीवन में समस्या पैदा करते हैं, त्याग से जीवन को जटिलताओं का समाधान मिलता है। उन्होंने आगे कहा कि भोगवाद पाश्चात्य संस्कृति की देन है।

सचिव प्रियंका चोपड़ा ने कहा कि हमारी शिक्षा से विद्यार्थियों को जीवन-विज्ञान शैली, सत्य, अहिंसा, तप, त्याग के संस्कार मिलने चाहिए। जिससे भोगवाद की समस्या का समुचित समाधान हो सके। मुनिश्री ने बताया कि शुभ भविष्य का निर्माण करना ही जीवन-विज्ञान अभियान का मुख्य ध्येय है।

इस अवसर पर मुनिश्री ने उपस्थित ६०० छात्राओं को योग, आसन, ध्यान और नशामुक्त रहने का संकल्प करवाया। इसके अलावा उन्होंने ध्यान-योग के प्रयोग से व्यक्तित्व विकास की विधा भी बताई। अणुव्रत समिति की बहिनों के अणुव्रत गीत से कार्यक्रम का प्रारम्भ हुआ। प्रियंका चोपड़ा ने मंच संचालन किया। बसंत सोनी मंडिया ने आभार ज्ञापन किया। स्कूल प्रधानाध्यापिका दीपिका ओझा ने विचारों की अभिव्यक्ति के साथ अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम में उषा जी आखावत भारतीय जैन संगठन के महिला विंग की मंत्री बतौर मुख्य अतिथि थी। अभातेममं की सदस्या विनीता बैंगानी, तेयुप से रोशन नाहर, अणुव्रत समिति के सदस्यों में दीपिका वेदमूथा, सीमा मरलेचा, लीना वेदमुथा, वरिष्ट सूरजमल बैंगानी, नीलेश सेमलानी, ललित कुमार, राममोहन त्रिपाठी आदि तथा विद्यालय के शिक्षक-शिक्षिकाएँ उपस्थित थे।

भगवान महावीर के अर्थशास्त्र पर कार्यशाला

टी-दासरहल्ली।

तेरापंथ सभा भवन में शासनश्री साध्वी कंचनप्रभाजी ने सभा के तत्त्वावधान में आयोजित 'महावीर के अर्थशास्त्र' कार्यशाला में कहा कि भगवान महावीर धर्म के प्रवक्ता थे। उन्होंने मानवीय मूल्यों को सर्वाधिक मूल्य दिया। आज बाजार का एक ही उद्देश्य है, पैसे का अधिकाधिक अर्जन। इसके लिए मानवीय मूल्यों को तिलांजलि दी जा रही है। यही वर्तमान की सर्वाधिक समस्या है। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने भगवान महावीर की वाणी के आधार पर गृहस्थ में जीने वाले भाई-बहिनों के लिए भौतिक विकास के साथ नैतिक विकास व आध्यात्मिक विकास की प्रेरणा दी। यही है महावीर का अर्थशास्त्र।

शासनश्री साध्वी मंजुरेखाजी ने कहा कि भगवान महावीर के द्वारा प्राप्त संदेश प्रासंगिक हैं। जिन्होंने कहा कि इच्छाओं का सीमाकरण ही आधुनिक जमाने में शांति का उपहार हैं।

साध्वी कंचनप्रभाजी द्वारा मंगलमंत्रोच्चार से कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ। साध्वी मंजुरेखाजी, साध्वी उदितप्रभाजी, साध्वी निर्भयप्रभाजी, साध्वी चेलनाश्रीजी नें मधुर गीत का संगान किया। संस्थापक अध्यक्ष लादूलाल बाबेल, अध्यक्ष नवरतन गांधी, तेयुप अध्यक्ष दिलीप पोखरणा ने भाव व्यक्त किए।

इस अवसर पर तेरापंथ सभा ट्रस्ट परिवार, तेममं परिवार, तेयुप परिवार एवं दासरहल्ली व निकटतम क्षेत्रों से सकल जैन समाज के श्रावक-श्रविकाओं की उपस्थिति रही। संचालन सभा मंत्री प्रवीण बोहरा ने किया।

त्रिदिवसीय अणुव्रत जीवन विज्ञान कार्यक्रम

चेन्नई।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्त्वावधान में अणुव्रत समिति द्वारा महाप्रज्ञ अलंकरण दिवस त्रिदिवसीय मनाया। दूसरे दिन प्रार्थना सभा में जीवन-विज्ञान के रूप में तेरापंथ जैन विद्यालय हायर सेकेंडरी स्कूल, पट्टालम, चेन्नई में आयोजित हुआ।

कार्यक्रम की शुरुआत स्कूल के विद्यार्थियों द्वारा अणुव्रत गीत के मंगलाचरण से हुई। स्वागत भाषण एवं अणुव्रत समिति द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यों की जानकारी समिति अध्यक्ष ललित आंचलिया ने दी। ललित आंचलिया ने स्थानीय तमिल भाषा में बच्चों को अणुव्रत संकल्प दिलवाए। सेजल समदड़िया ने बच्चों को विभिन्न रूप से योगा एवं प्राणायाम करवाया। प्रधानाध्यापिका आशा क्रिस्टी ने अणुव्रत समिति का स्वागत किया एवं कार्यक्रम के लिए धन्यवाद दिया।

अणुव्रत समिति, चेन्नई द्वारा स्कूल की प्रधानाध्यापिका एवं सेजल समदड़िया का सम्मान किया गया। कार्यक्रम में तेरापंथ एजुकेशनल एंड मेडिकल ट्रस्ट के ज्वाइंट सेक्रेटरी एवं अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी नेशनल एग्जिट कमिटी मेंबर डॉ० कमलेश नाहर उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन अणुव्रत विज्ञान प्रभारी डॉ० भरत मरलेचा ने किया।

प्रतिभा सम्मान समारोह

मदनगंज, किशनगढ़।

तेरापंथ भवन में तेरापंथी सभा द्वारा समाज के प्रतिभावान २५ छात्र-छात्राओं एवं वरिष्ठ व्यक्तियों का सम्मान किया गया। मुनि चैतन्य कुमार जी 'अमन' एवं हड्डी रोग विशेषज्ञ डॉ० संजय राठी तथा स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ० मंजु राठी एवं अजमेर से समागत टीपीएफ के वरिष्ठ सदस्य वरुण पितलिया, मुख्य वक्ता के रूप में प्रतिभा सम्मान समारोह में उपस्थित रहे।

कार्यक्रम में मुनिश्री ने कहा कि प्रतिभा का सम्मान दर्शन, निदर्शन और पथदर्शन है। जिससे प्रेरित होकर व्यक्ति अपना विकास कर सकता है। सबसे बड़ा प्रतिभावान वह जो समय का मूल्यांकन करना जाने। आज के युग में शिक्षा के प्रति छात्र-छात्राओं का रुझान बढ़ा है। वह अध्ययन करके उच्च से उच्च डिग्री हासिल करने का प्रयास करते हैं। किंतु शिक्षा के साथ सत्संस्कार, धार्मिक व नैतिक संस्कार अनिवार्य हों।

मुख्य वक्ता टीपीएफ के वरिष्ठ सदस्य वरुण पितलिया ने कहा कि हर छात्र-छात्राओं को अभिभावक प्रेशर ना दें, बल्कि वह किस क्षेत्र का चुनाव करे, उन्हें अपनी रुचि के अनुसार क्षेत्र में आगे बढ़ने का अवसर दें। डॉ० संजय मित्तल व डॉ० मंजु राठी ने भी छात्र-छात्राओं को विशेष प्रेरणा दी।

कार्यक्रम का मंगलाचरण महिला मंडल ने किया। सभा अध्यक्ष माणकचंद गेलड़ा ने अतिथियों का स्वागत किया। महिला मंडल मंत्री करुणा जैन, अणुव्रत समिति के पूर्व वरिष्ठ कार्यकर्ता सुरेश जामड़ ने विचार रखे। लगभग २५ प्रतिभावान को प्रमाण पत्र, चाँदी का सिक्का एवं उपयोगी इंग्लिश डिक्शनरी प्रदान कर सम्मान किया गया। इसमें विशेष डिग्री प्राप्त करता व १०वीं व १२वीं में ८५ प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वालों का सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथी सभा के मंत्री डॉ० अजय कवाड़ ने किया व आभार तेयुप मंत्री निखिल संचेती ने किया।

विघ्नहर हींकर अनुष्ठान का आयोजन

बालोतरा।

मुनि मोहजीत कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा की ओर से 'विघ्नहर हींकर अनुष्ठान' का आयोजन न्यू तेरापंथ भवन में किया गया।

संयोजक मुकेश सालेचा ने बताया कि इस अनुष्ठान में २३वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ की स्तुति में आचार्य सिद्धसेन द्वारा रचित कल्याण मंदिर स्तोत्र को सस्वर लयबद्ध मुनि जयेश कुमार जी ने प्रस्तुत किया।

'विघ्नहर हींकर अनुष्ठान' हीं की विशाल आकृति में समायोजित था। इस आकृति में दंपतियों की गणवेश में उपस्थिति अनुष्ठान सिद्ध का आधार रहा। अनुष्ठान का प्रारंभ नमस्कार महामंत्र के साथ मुनि भव्यकुमार जी द्वारा प्रभु पार्श्वनाथ की स्तुति संगान से हुआ।

मुनि मोहजीत कुमार जी ने कहा कि कल्याण मंदिर स्तोत्र की रचना उज्जैयनी के शिव मंदिर में शिव लिंग के सम्मुख आचार्य सिद्धसेन ने की जिसका प्रभाव आज भी जन-जन के मन पर है।

इस अनुष्ठान के समायोजन में तेरापंथी सभा, तेयुप, महिला मंडल, किशोर मंडल, कन्या मंडल का योग सफलता का सूचक था। अनुष्ठान में जैन ओम की रंगोली का निर्माण ऋषिका चोपड़ा और विधि भंसाली ने किया।

कार्यक्रम के आगंतुक अतिथियों एवं अनुष्ठान संभागियों का स्वागत सभा अध्यक्ष धनराज ओस्तवाल, आभार सभा मंत्री महेंद्र वेद मूथा और अनुष्ठान संयोजक मुकेश सालेचा ने किया।

हमारे विचार अग्निशिखा ज्यों ऊर्ध्वमुखी हों

माधावरम्।

तेरापंथ माधावरम् ट्रस्ट के तत्त्वावधान में आयोजित नवाह्निक अनुष्ठान के पाँचवें दिन मुनि सुधाकर कुमार जी ने कहा कि अग्नि को किधर से भी जलाओ, उसकी शिखा ऊपर की ओर रहेगी। पानी निम्नमुखी होता है। वह नीचे की ओर बहता है। हमारे विचार और संकल्प अग्निशिखा ज्यों ऊर्ध्वमुखी होने चाहिए, पानी की तरह निम्नमुखी नहीं। विचार और संकल्प ही हमारे भाग्य-विधाता हैं। मनुष्य अपने विचारों और संकल्पों से भिखारी और सम्राट होता है। हमें सम्राट का जीवन जीना चाहिए, भिखारी का नहीं।

मुनि नरेश कुमार जी ने नवाह्निक अनुष्ठान करवाया। इस अनुष्ठान के प्रायोजक दमयंतीबाई, मनोज कुमार सकलेचा का सम्मान तेरापंथ माधावरम् ट्रस्ट के ट्रस्टी रमेश परमार एवं माणकचंद आच्छा ने किया। कार्यक्रम का संचालन प्रवीण सुराणा ने किया।

'आचार्य कालू महाश्रमण फिएस्टा' का आयोजन

छापर।

तेयुप एवं तेमम के तत्त्वावधान में तेरापंथ किशोर मंडल और कन्या मंडल के द्वारा आयोजित 'Acharya Kalu Mahashraman Fiesta' का भव्य आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ युवक परिषद के मंत्री एवं संस्कारक दिलीप मालू द्वारा पूर्ण मंत्रोच्चार सहित जैन संस्कार विधि से किया गया।

अभातेयुप के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि योगेश कुमार जी का मंगल आशीर्वाद सभी को मिला। मुनि योगेश कुमार जी ने कहा कि इतना सुंदर भव्य आयोजन तो चातुर्मास के प्रारंभ में ही होना चाहिए था, इसके लिए किशोर मंडल और कन्या मंडल ने बहुत ही श्रम किया और उसी श्रम से इतना सुंदर कार्यक्रम का आयोजन हो रहा है। उन्होंने सभी के लिए शुभकामनाएँ प्रेषित की।

चातुर्मास व्यवस्था समिति के महामंत्री नरेंद्र नाहटा, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष प्रदीप सुराणा, तेयुप के अध्यक्ष सौरभ भुतोड़िया, जेटीएन प्रतिनिधि शांति दुधोड़िया एवं किशोर मंडल संयोजक प्रथम नाहटा ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम में चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष माणकचंद नाहटा, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष सरिता सुराणा, मंत्री अलका बैद एवं प्रचार-प्रसार मंत्री शांति दुधोड़िया सहित अनेक पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं की उपस्थिति रही।

परम पूज्य गुरुदेव, साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी एवं अनेकानेक चरित्रात्माओं का भी यहाँ पधारना हुआ, सभी का मंगल आशीर्वाद प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम को सफल बनाने में कार्यक्रम के संयोजक किशोर मंडल से प्रथम नहाटा और कन्या मंडल से भाविका दुधोड़िया का सराहनीय सहयोग रहा।

तप अभिनंदन, उड़ान कार्यशाला एवं कार्यकर्ता सम्मान समारोह

हैदराबाद।

साध्वी त्रिशला कुमारी जी के सान्निध्य में तेयुप द्वारा तप अभिनंदन, 'उड़ान कार्यशाला' एवं 'कार्यकर्ता सम्मान समारोह' का आयोजन तेरापंथ भवन, सिकंदराबाद में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ तेयुप की भिक्षु प्रज्ञा मंडली ने विजय गीत के संगान के साथ किया।

अध्यक्ष विरेंद्र घोषल ने इस 'उड़ान कार्यशाला' में सभी का स्वागत किया। अध्यक्ष महोदय ने कहा कि टीम एमबीडीडी ने पूरे जोश के साथ शानदार कार्य किया। तपस्वीगण ने साध्वीश्री की प्रेरणा से तपस्या कर धर्मसंघ व परिवार का नाम रोशन करते हुए अपना आत्म-कल्याण किया है।

तेयुप सभी के तप की अनुमोदना करता है। आध्यात्मिक मंगलकामना करता है। तेमम अध्यक्ष अनिता गिड़िया ने सभी संस्थाओं की ओर से शुभकामनाएँ प्रेषित की। एमबीडीडी तेलंगाना प्रभारी विशाल आंचलिया ने इस अवसर पर एमबीडीडी के बारे में जानकारी दी।

साध्वी त्रिशला कुमारी जी ने कहा कि हर व्यक्ति जीवन में एक ऊँची उड़ान भरना चाहता है, यानी सफलता को प्राप्त करना चाहता है। सफलता प्राप्ति के लिए जरूरी है आत्मविश्वास। जिस व्यक्ति के भीतर आत्मविश्वास का दीप प्रज्वलित है उसकी सफलता को कोई रोक नहीं सकता है।

साध्वी कल्पयशा जी ने कहा कि जीवन की मूल्यवत्ता इस बात पर निर्भर करती है कि हम कहाँ खड़े हैं, किससे जुड़े हुए हैं। तेयुप एक ऐसी संस्था है, जिससे जुड़ने से जीवन की मूल्यवत्ता और गुणवत्ता दोनों बढ़ जाती है।

साध्वी संपत्तिप्रभा जी ने कहा कि युवकों के लिए शम, श्रम, सम के साथ गुण संक्रमण का गुण भी जरूरी है, तभी हम उड़ान भर सकते हैं। साध्वी रश्मिप्रभा जी ने गीत प्रस्तुत किया।

तेयुप के पूर्व अध्यक्ष केवल लुणावत, अशोक बरमेचा, राजेंद्र बोथरा, नवनीत छाजेड़ सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्य उपस्थित थे।

मंत्री नीरज सुराना ने साध्वीश्री जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए सभी का आभार व्यक्त किया।

आचार्यश्री तुलसी जन्मोत्सव का आयोजन

गुवाहाटी।

अणुव्रत समिति, गुवाहाटी द्वारा तेरापंथ धर्मसंघ के नवमाचार्य अणुव्रत अनुशास्ता श्री तुलसी का १०९वाँ जन्म दिवस मनाया गया। उल्लेखनीय है कि अणुव्रत आंदोलन के प्रणेता आचार्य तुलसी ने संघ एवं समाज ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व को अनेक अवदान दिए, जिनमें प्रमुख है—अणुव्रत आंदोलन। इसके माध्यम से उन्होंने अशांत विश्व को शांति का संदेश दिया।

गुरुदेव तुलसी के १०९वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य पर अणुव्रत समिति गुवाहाटी द्वारा एक भक्ति संध्या का आयोजन स्थानीय तेरापंथ भवन में किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ बाबूलाल सुराणा एवं अशोक मालू द्वारा प्रस्तुत अणुव्रत गीत के संगान से हुआ। इस अवसर पर अध्यक्ष बजरंगलाल डोसी ने गुरुदेव श्री तुलसी को श्रद्धार्पण करते हुए सभी का स्वागत-अभिनंदन किया। कार्यक्रम में उपस्थित तेरापंथी सभा के अध्यक्ष बजरंग कुमार सुराणा एवं मंत्री रायचन्द पटावरी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। साथ ही अणुविभा के सहमंत्री छत्तरसिंहजी चौरड़िया, अणुव्रत समिति के मंत्री अशोक कुमार बोरड़, सभा के वरिष्ठ सहमंत्री राजकुमार बैद, महिला मंडल अध्यक्ष मंजु भंसाली, मनोज छाजेड़, जय कुमार सुराणा, बाबूलाल सुराणा, भूमिका चोपड़ा आदि ने गीतिकाओं के माध्यम से भावांजलि प्रस्तुत की।

कार्यक्रम का संचालन उपाध्यक्ष बजरंग बैद (अणुविभा असम राज्य प्रभारी) एवं धन्यवाद ज्ञापन कोषाध्यक्ष संजय चोरड़िया ने किया।

सेवाओं का मूल्यांकन होना चाहिए

मदनगंज-किशनगढ़।

दशहरा मेला कमेटी मदनगंज-किशनगढ़ द्वारा मालचंद सुराणा की सेवा के उत्कृष्ट कार्यों के लिए किशनगढ़ रत्न सम्मान से सम्मानित होना समाज के लिए गौरव का विषय है। मुनि चैतन्य कुमार 'अमन' ने कहा कि सेवाओं का मूल्यांकन होना चाहिए। मालचंद सुराणा एक सुश्रावक तथा सेवाभावी व्यक्तित्व के धनी हैं। प्रत्येक चातुर्मास में परम पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री महाश्रमण जी की दो माह सेवा करते हैं तथा प्रतिवर्ष दो माह एकांतर तपस्या भी करते हैं।

किशनगढ़ में प्रवास करने वाले साधु-साध्वियों की भी तन-मन से सेवा करते हैं। न केवल तेरापंथ समाज अपितु सभी सभा-संस्थाओं को अपनी सेवाएँ देने का प्रयास करते हैं। इनकी आध्यात्मिकता के साथ अन्य क्षेत्रों में भी सेवा भावना का विकास हो तथा संघ व संघपति की समर्पित भाव से सेवा करते रहें। पूरे परिवार में सेवा के संस्कारों का सिंचन होता रहे, यही मंगलकामना है ।

सम्मान समारोह

आमेट।

तेरापंथ भवन में साध्वी प्रांजलप्रभा जी के सान्निध्य में विजय कुमार देवपुरा की सुपौत्री एवं मुकेश कुमार देवपुरा की सुपुत्री आयुषी देवपुरा का सिविल जज के परिणाम में सलेक्शन होने पर श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा द्वारा सम्मान-पत्र द्वारा सम्मानित किया गया। साध्वीश्री ने कहा कि जन्म से लेकर २५ वर्ष तक की उम्र, व्यक्ति के विकास व अपनी शक्ति के सम्यक् नियोजन की उम्र है।

आयुषी ने एक ऊँचे मुकाम को प्राप्त किया है। प्रोफेशनल उपलब्धि के साथ-साथ आध्यात्मिक विकास भी चलता रहें, यही मंगलकामना।

सम्मान के क्रम में तेरापंथ सभा अध्यक्ष देवेंद्र मेहता, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा मीना गेलडा, मंत्री संगीता पामेचा ने आपको उज्ज्वल भविष्य की शुभकामना दी।

मुकेश देवपुरा ने संपूर्ण तेरापंथ समाज व भवन में विराजित साध्वीश्री जी के प्रति अनंत-अनंत कृतज्ञता ज्ञापित की। आयुषी ने बताया कि अपने इस मुकाम को हासिल करने में किस प्रकार माता-पिता व परिवार का सबका सहयोग प्राप्त हुआ। आयुषी को सम्मान-पत्र तेरापंथ सभा अध्यक्ष देवेंद्र मेहता, मंत्री ज्ञानेश्वर मेहता, गणपत लाल डांगी, अशोक गेलड़ा, तेयुप अध्यक्ष पवन कच्छारा आदि द्वारा प्रदान किया गया। संचालन ज्ञानेश्वर मेहता ने किया।

तीन दिवसीय शिविर का आयोजन

दिवेर।

मुनि प्रकाश कुमार जी एवं मुनि सिद्धप्रज्ञ जी द्वारा 'उज्जैन' का दिवेर की फूलीबाई भेरूलाल नाहर बालिका उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में जीवन-विज्ञान का प्रशिक्षण दिया गया। मुनि प्रकाश कुमार जी ने कहा कि विद्यार्थी प्रारंभ से ही कैसे बैठना, कैसे खाना, कैसे चलना, कैसे सोना, कैसे बोलना आदि सीख लेता है, उसका जीवन धन्य हो जाता है। चलते हुए खाना और खाकर तुरंत चल देना दोनों स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं।

मुनिश्री ने इस अवसर पर पानी पीने का सही तरीका, जीने का सही तरीका, खाने का सही तरीका आदि बातों का प्रशिक्षण दिया। इस अवसर पर मुनि सिद्धप्रज्ञ जी ने आलस्य से मुक्ति शारीरिक दर्द से मुक्ति के लिए तथा स्मरण शक्ति के विकास के लिए प्रेक्षाध्यान के प्रयोग करवाए। अणुव्रत आंदोलन की जानकारी देते हुए विद्यार्थी और अध्यापक अणुव्रत के नियमों पर प्रकाश डाला। सभी छात्राओं ने अणुव्रत के नियमों को स्वीकार करते हुए नियमित रूप से प्रेक्षाध्यान और जीवन-विज्ञान के प्रयोग करने का संकल्प किया।

स्कूल की ओर से वरिष्ठ अध्यापक हरीश सालवी ने मुनिश्री का स्वागत किया। मुनि संजय कुमार जी की प्रेरणा से यह शिविर आयोजित हुआ। तेरापंथ सभा की ओर से बड़ी संख्या में विद्यार्थियों की उपस्थिति रही। सभी विद्यार्थियों को पारितोषिक के रूप में पेन वितरित किए गए। तेरापंथ सभा के मंत्री बाबूलाल लोढ़ा ने आभार व्यक्त किया। इस अवसर अनेक पदाधिकारीगण तथा सदस्यों की उपस्थिति रही। मुनि प्रकाश कुमार जी द्वारा दिए गए मौन की भाषा का मुनि सिद्धप्रज्ञ जी ने हिंदी में अनुवाद किया। स्कूल के प्रधान व अणुव्रत समिति के अध्यक्ष गणेश राम जे० ने आभार व्यक्त किया।

प्रेक्षा दिवस का आयोजन

सूरत।

मुनि उदित कुमार जी के सान्निध्य में प्रेक्षा फाउंडेशन, सूरत के तत्त्वावधान में तेरापंथ भवन सिटीलाइट में प्रेक्षा दिवस का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर मुनि उदित कुमार जी ने कहा कि प्रेक्षाध्यान आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी की २० वर्ष की सुदीर्घ साधना का सुफल है। प्रेक्षाध्यान द्वारा पूर्व कृत कर्मों की निर्जरा होती है। साथ ही व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं भावनात्मक विकास भी होता है। प्रेक्षाध्यान के प्रयोग सर्व सुलभ हैं। सर्वहितकारी और सर्व सुखकारी हैं।

मुनिश्री ने आगे कहा कि विशेष ट्रेनिंग के द्वारा कुछ लोगों को बदला जा सकता है। लेकिन अपने आपको बदलना बहुत कठिन काम होता है। अपनी आदतों का परिवर्तन करने के लिए सबसे सरल और श्रेष्ठ उपक्रम है—प्रेक्षाध्यान।

डॉ० माया ने दीर्घ श्वास प्रेक्षा के प्रयोग करवाए। प्रेक्षा प्रशिक्षिकाओं ने मंगलभावना करवाई। प्रेक्षाध्यान के विकास में विशेष योगदान के लिए डॉ० मायाबेन एवं चेतनाबेन का सम्मान किया गया। प्रेक्षा प्रशिक्षिकाओं द्वारा प्रारंभ में प्रेक्षा गीत का संगान किया गया। कार्यक्रम का संचालन प्रेक्षा प्रशिक्षिकाओं अलका सांखला एवं रेणु बैद द्वारा किया गया। कार्यक्रम में ४०० से अधिक भाई-बहन संभागी बने।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
14 - 20 नवंबर, 2022

✦ *मुख को साफ रखना चाहिए। उसके लिए कुल्ला ही नहीं, वाक्संयम और खाद्यसंयम भी आवश्यक है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

'कैसे बनें सुखी और स्वस्थ समाज' कार्यशाला

विजयनगर।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा व्यक्तित्व विकास कार्यशाला का आयोजन विजयनगर स्थित तेरापंथ भवन में मुनि रश्मि कुमार जी के सान्निध्य में हुआ। जिसका मुख्य विषय था–'कैसे बने सुखी और स्वस्थ समाज'। कार्यक्रम की शुरुआत तेयुप की विजय स्वर संगम द्वारा किया गया।

तत्पश्चात परिषद अध्यक्ष ने उपस्थित गुर्जर समाज एवं सभी श्रावक समाज का स्वागत किया। सभा अध्यक्ष प्रकाश गांधी एवं महिला मंडल मंत्री सुमित्रा बरड़िया ने अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित की। राजस्थान की पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे एवं कोटा के पूर्व विधायक प्रह्लाद गुंजन द्वारा प्राप्त शुभकामना संदेश का वाचन उपाध्यक्ष विकास बांठिया ने किया।

संगठन मंत्री कुलदीप बागरेचा ने कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ० धीरज मरोठी का परिचय कराया। डॉ० धीरज ने श्रावकों को जागृत करते हुए स्वस्थ जीवन कैसे जिया जाए उसकी विस्तृत चर्चा की। उन्होंने बताया कि कैसे अपनी दिनचर्या रहनी है, खान-पान कैसा रहना चाहिए एवं शारीरिक व्यायाम के साथ-साथ मानसिक व्यायाम भी अति आवश्यक है। इससे इंसान की कार्यक्षमता बढ़ती है। डॉ० धीरज का जैन पट्ट द्वारा सम्मान किया। साथ ही मोमेंटो तेयुप विजयनगर की टीम द्वारा दिया गया।

मुनि रश्मि कुमार जी ने शारीरिक, मानसिक रूप से स्वस्थ रहने की प्रेरणा दी। मुनि प्रियांशु कुमार जी ने अपने विचार व्यक्त किए। तेयुप पूर्व अध्यक्ष राजेश चावत ने भी अपने विचार रखे।

इस अवसर पर तेयुप से उपाध्यक्ष मनीष चावत, सहमंत्री कमलेश चोपड़ा, कोषाध्यक्ष आलोक गंग, पूर्व अध्यक्ष महेंद्र टेबा, प्रेक्षाध्यान शिविर संभागी, तेयुप कार्यसमिति सदस्यगण एवं गुर्जर समाज से नाथुराम गुर्जर, राजू लीडिया, मोहनलाल खटाना आदि लगभग २०० लोगों की उपस्थिति रही।

संचालन तेयुप मंत्री राकेश पोखरना ने किया। आभार ज्ञापन सुशील पारख ने किया। कार्यक्रम का समापन मुनिश्री द्वारा मंगलपाठ से हुआ।

त्रिदिवसीय आध्यात्मिक कला प्रदर्शनी का समापन

गंगाशहर।

मुनि शांति कुमार जी के सान्निध्य में तीन दिवसीय आध्यात्मिक कला प्रदर्शनी का समापन हुआ। प्रदर्शनी में साधु-साध्वियों द्वारा निर्मित प्राचीन पांडुलिपियाँ, सूक्ष्माक्षर पत्र, हस्तनिर्मित कलाकृतियों का दर्शकों में इतना आकर्षण रहा कि दो दिवसीय इस प्रदर्शनी का एक दिन और बढ़ाया गया।

प्रदर्शनी में २०० वर्ष प्राचीन जैन लोक का चित्र जनता के लिए खास आकर्षण का केंद्र रहा, वहीं एक छोटे से पत्र पर पंचसूत्रम् जिसमें छह हजार अक्षर लिखे गए थे, वह भी सबको चकित करने वाला रहा। हाथ से बनाई जाने वाली स्याही भी यहाँ रखी गई, जिसे आज भी तेरापंथ धर्मसंघ में साध्वियों द्वारा तैयार किया जाता है।

तेयुप के तत्त्वावधान में तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा आयोजित इस प्रदर्शनी में चित्र प्रतियोगिता के चित्रों को भी प्रदर्शित किया गया। अवलोकन के क्रम में बीकानेर सीएमएचओ डॉ० अबरार पंवार, डॉ० सिद्धार्थ असवाल, पुलिस निरीक्षक (एसीबी), पिंकी गंगवाल, महेंद्र पंचारिया, सुनील दत्त रंगा, कमल जोशी, पूर्व महापौर नारायण चोपड़ा, पेंटर धर्मा आदि ने प्राचीन कलाकृतियों को देख इसे एक अमूल्य धरोहर बताया। प्रदर्शनी के संयोजन में तेयुप व किशोर मंडल सदस्यों की सहभागिता रही।

'लक्ष्य है ऊँचा हमारा' साइक्लोथॉन रैली

गंगाशहर।

तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा 'से नो टू क्रैकर्स' संदेश के साथ साइक्लोथॉन साइकिल रैली का आयोजन किया गया। अभातेयुप निर्देशित दिवाली के संदर्भ में 'लक्ष्य है ऊँचा हमारा' रैली का आयोजन तेयुप के तत्त्वावधान में किशोर मंडल द्वारा किया गया।

सर्वप्रथम शांति निकेतन में साध्वी कीर्तिलता जी के मंगलपाठ के पश्चात तेयुप अध्यक्ष अरुण नाहटा ने हरी झंडी दिखाकर रैली प्रारंभ की। मेन बाजार, पाबू चौक, महाप्रज्ञ चौक, महावीर चौक, गौतम चौक, नैतिकता का शक्तिपीठ, नोखा रोड आदि कई मुख्य मार्गों से होती हुई यह रैली तेरापंथ भवन पहुँची, जहाँ सभी किशोरों ने मुनि शांति कुमार जी एवं मुनि जितेंद्र कुमार जी से मंगलपाठ सुना।

किशोर मंडल संयोजक दीपेश बैद ने कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी दी। रैली की संयोजना में तेयुप मंत्री भरत गोलछा, ब्लू ब्रिगेड मेंबर कुलदीप छाजेड़, नीरज बोथरा आदि सदस्यों ने सक्रिय भूमिका निभाई।

दंपति शिविर का आयोजन

कटक, ओड़िशा।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में तेयुप व तेमम के तत्त्वावधान में दंपति शिविर का आयोजन तेरापंथी सभा भवन में हुआ। जिसमें २७ दंपति व अन्य भाई-बहनों ने भाग लिया। कार्यक्रम में मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि दुनिया में अनेक प्रकार के रिश्तों में एक मजबूत रिश्ता दंपति का है। परिवाररूपी रथ को खींचने वाले दो मजबूत आधारभूत व्यक्तियों का संयुक्त नाम है–दंपति। परिवार के केंद्र बिंदु का नाम–दंपति है। मुनिश्री ने आगे कहा कि आदमी व्यसन व क्रोध छोड़ दे और स्त्री फैशन और जिद को छोड़ दे तो जीवन सुखमय हो जाएगा।

इस अवसर पर मुनि परमानंद जी ने कहा कि परस्पर तालमेल व सामंजस्य से दाम्पत्य जीवन सुखमय बनता है। इस अवसर पर मंगलाचरण बाल मुनि कुणाल कुमार जी ने किया।

स्वागत भाषण आनंद सुराणा दंपति ने किया। इस अवसर पर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष मोहनलाल सिंघी, वरिष्ठ श्रावक मंगलचंद चोपड़ा, कंचन देवी कोठारी ने अपने विचार व्यक्त किए। मुकेश सेठिया, राजेंद्र लुणिया, शुभकरण बरड़िया, मनोज ललवानी आदि अनेक दंपतियों ने अपने अनुभव प्रस्तुत किए।

द्वितीय चरण में मंगलाचरण रणजीत-सुनीता दुगड़ ने किया। आभार ज्ञापन तेमम अध्यक्ष हीरा बैद व तेयुप मंत्री मनीष सेठिया ने किया। दो सत्रों में शिविर आयोजित हुआ।

साइक्लाथॉन कार्यक्रम

दक्षिण मुंबई।

तेरापंथ किशोर मंडल, दक्षिण मुंबई द्वारा तेयुप के मार्गदर्शन में साइकिल रैली निकाली गई। यह रैली 'से नो टू क्रैकर्स' के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए की गई। रैली ७ किलोमीटर से अधिक की दूरी पर संपन्न हुई।

रैली में भाग लेने वाले दिशांत ढेलरिया, वीर कच्छारा, तन्मय झवेरी, मुदित बोलिया, ध्रुव ढींग, ऋषि धाकड़, दिशान सिंघवी, अर्थ कच्छारा, धीर ओस्तवाल आदि की सहभागिता रही।

तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

२५ बोल प्रतियोगिता का आयोजन

देशनोक।

मुनि आकाश कुमार जी एवं मुनि हितेंद्र कुमार जी के सान्निध्य में तेयुप के तत्त्वावधान में तेरापंथ किशोर मंडल, देशनोक द्वारा २५ बोल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। सेमीफाइनल एवं फाइनल राउंड रखा गया। फाइनल में आने वाले तीन ग्रुप रखे गए। पहला ग्रुप ५ से १५ साल, दूसरा ग्रुप १६ से ३० साल, तीसरा ३० साल से ऊपर का। ६ व्यक्ति फाइनल राउंड में पहुँचे। फाइनल राउंड का संयोजन निलेश बाफना ने किया।

सक्षम छल्लानी ने स्क्रीन को संभाला एवं दृष्टि नाहर ने प्रश्नों को अच्छी तरह से समायोजित किया। इस २५ बोल की प्रतियोगिता में ५ से १५ वर्ष की उम्र में प्रिंस भंसाली ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। १६ से ३० वर्ष की श्रेणी में विशाखा नाहर ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। ३० वर्ष से ऊपर की श्रेणी में उषा बरड़िया ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। सभी प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को निलेश बाफना ने सम्मानित किया। नीलेश बाफना का सम्मान तेरापंथ किशोर मंडल के संयोजक तुषार मालू ने किया।

वस्त्र वितरण कार्यक्रम

सेलम।

तेयुप, सेलम एवं किशोर मंडल द्वारा 'सेवा प्रोजेक्ट' के अंतर्गत 'कमलयालम चेरिटेबल फाउंडेशन, वालापाड़ी में कपड़े वितरण किए गए।

दीपावली पावन त्योहार के अवसर पर 'नेकी की राह' कार्यक्रम के तहत, तेयुप टीम द्वारा जरूरतमंद बच्चों को कपड़े वितरण किए गए। मंत्री प्रवीण संचेती व कोषाध्यक्ष प्रशांत लुंकड़ द्वारा नमस्कार महामंत्र स्मरण से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ।

चेरिटेबल ट्रस्ट के फाउंडर ने तेयुप, सेलम का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर निवर्तमान अध्यक्ष भरत डूंगरवाल भी उपस्थित रहे।

साइक्लोथोन का आयोजन

बैंगलुरु।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप और तेरापंथ किशोर मंडल के संयुक्त नेतृत्व में साइक्लोथोन का आयोजन किया गया। मुनि अर्हत कुमार जी से मंगलपाठ श्रवण कर रैली का शुभारंभ हुआ। किशोरों और युवाओं ने तेरापंथ भवन से कब्बन पार्क और वहाँ से तेरापंथ भवन तक रैली से इस दिवाली आतिशबाजी न हो इसका आह्वान किया।

साइक्लोथोन में अध्यक्ष प्रदीप चोपड़ा, उपाध्यक्ष सुधीर पोखरणा, विक्रम सेठिया, कोषाध्यक्ष पवन चोपड़ा, सह-प्रभारी रौनक नाहर, सह-संयोजक पीयूष नाहर, साइक्लोथोन के संयोजक जतिन बोराणा, मनीष भंसाली, विमल रांका, जितेंद्र कोचर, पंकज मांडोत, जय कोठारी, रंजित चावत आदि के साथ युवाओं और किशोरों ने भाग लिया।

हड्डी जाँच शिविर का आयोजन

राजाजीनगर

तेयुप द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, राजाजीनगर में जोड़ों की जाँच शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में विश्व-विख्यात जोड़ प्रत्यारोपण सर्जन डॉ० धीरज मरोठी एवं डॉ० सिद्धार्थ कुमार ने अपनी सेवाएँ दी।

कैंप से पूर्व डॉ० धीरज मरोठी तेरापंथ भवन, गांधीनगर में विराजित मुनि अर्हत कुमार जी के दर्शन हेतु पधारे। वहाँ उपस्थित जनमेदिनी को उन्होंने स्वस्थ जीवन शैली के सूत्र बताए। डॉ० मरोठी का परिषद परिवार की ओर से अध्यक्ष प्रदीप चोपड़ा, पर्यवेक्षक विक्रम सेठिया, सभा अध्यक्ष कमल दुगड़, रजत बैद, रोहित कोठारी ने सम्मान किया।

कैंप में कुल ८० लोगों ने चिकित्सकीय जाँच का लाभ लिया।

गुरुदेवश्री तुलसी के १०९वें जन्मदिवस

राजाजीनगर।

तेरापंथ धर्मसंघ के नवम् अधिशास्ता गणाधिपति गुरुदेव आचार्यश्री तुलसी के १०६वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य पर तेयुप, राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर श्रीरामपुरम् में रियायती दर पर किडनी प्रोफाइल टेस्ट का समायोजन किया गया, जिसमें ६ विभिन्न प्रकार की जाँच की गई। कुल ४६ लोगों ने इसका लाभ लिया।

स्थानीय लोगों ने तेयुप द्वारा प्रदत्त मानव सेवा के उपक्रम की प्रशंसा करते हुए कहा कि समय-समय पर सेंटर द्वारा आयोजित इन रियायती दरों के कैंप से आम जनता को काफी लाभ प्राप्त हो रहा है। इस कैंप को सुव्यवस्थित आयोजन करने में एटीडीसी स्टॉफ ज्योति, दिव्या एवं पवन का सहयोग रहा।

अक्षय तृतीया-२०२३ के बैनर व लोगो का अनावरण

क्या खाना और कितना खाना-भोजन में रखें विवेक : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, १ नवंबर, २०२२

महामनस्वी परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र में प्रश्न उठाया गया है कि वनस्पतिकायिक जीव किस समय सबसे अल्प आहार करते हैं और किस समय अधिक आहार करते हैं?

वनस्पति को मनुष्य भी भोजन के रूप में प्रयोग करते हैं। शाकाहारी मनुष्य इसका बहुत ज्यादा उपयोग करता है। प्रश्न उठता है, मांसाहार में जीव हिंसा है तो शाकाहार में जीव हिंसा नहीं होती है? वनस्पतिकाय का भोजन में जीव हिंसा को नकारा जाना तो कठिन है। दोनों प्रकार में हिंसा तो है।

शाकाहारी आदमी केवल शाकाहार से काम चला सकता है। जो मांसाहारी है वे शाकाहार और मांसाहार दोनों का उपयोग करते हैं। वनस्पतिकाय में तो जीव अपने आप खत्म हो सकते हैं। पर मांसाहार में तो जानबूझकर जीवों को मारा जाता है। एकेंद्रिय और पंचेंद्रिय का तारतम्य भी होता है। हमारे भाव शाकाहार में लगभग भावात्मक सात्त्विकता और मांसाहार से भावात्मक तामसिकता आ सकती है। बाकी अपना-अपना चिंतन है।

जैन धर्म में तो शाकाहार को ही स्वीकार किया गया है। गृहस्थ चाहे होस्टल में हो, होटल में हो या हॉस्पिटल में वे मांसाहार से बचने का प्रयास रखें। दवाई में भी मांसाहार से बचाव रहे। अहिंसा की अवधारणा में हम शाकाहार को लेकर चलते हैं। भावात्मक शुद्धता की बात हो सकती है।

वनस्पति में भी हम ध्यान दें कि एक तो अनंतकायिक और एक बिना अनंतकायिक होते हैं। जमीकंद में थोड़ी-सी वनस्पति में अनंत जीव हिंसा हो सकती है, इसका परिवर्जन रखने का प्रयास करें। इनका त्याग करने से अव्रत भी रुक जाती है और हिंसा से भी बचा जा सकता है।

उपरोक्त प्रश्न उत्तर दिया गया कि प्राभृत और वर्षा ऋतु इनमें जीव सबसे ज्यादा आहार करते हैं। रात्रियों के अनुसार व सूर्य के संक्रमण से छः ऋतुएँ होती हैं। अलग-अलग महीनों के आधार पर ये छः ऋतुएँ हो जाती हैं। शरद ऋतु में प्राभृत और वर्षा ऋतु से थोड़ा कम

आहार, हेमंत में उससे अल्प वसंत ऋतु में उससे कम आहार लेते हैं। ग्रीष्म ऋतु में सबसे कम आहार लेते हैं।

जीवन चलाने के लिए आहार की अपेक्षा रहती है। साधु को साधना करनी है। साधना करने के लिए शरीर को टिकाना है। शरीर को टिकाने के लिए आहार चाहिए। आहार करने से शरीर का काम चलता रहता है। साधु के आहार का भी संयम होता है। साधु का छठा व्रत है—रात्रि भोजन विरमण व्रत।

गृहस्थ भी विवेक से आहार का संयम रखें। कितना खाना और क्या खाना? खाकर खराब नहीं होना चाहिए। भोजन में विवेक रखना बड़ी बात है।

शासनश्री साध्वी चांदकुमारी जी रतननगर के संयम पर्याय के ८०वें वर्ष के उपलक्ष्य में पूज्यप्रवर ने फरमाया कि संयम की प्राप्ति जिस समय होती है, वह एक विलक्षण समय होता है। साध्वी चांदकुमारी जी आज संयम पर्याय के ८१वें वर्ष में प्रवेश कर रही हैं। वर्तमान में गुरुकुलवास में सबसे ज्यादा संयम पर्याय में आप बड़ी हैं। आपके चित्त में खूब समाधि रहे। स्वाध्याय-ध्यान में समय बीते। परिणामों की निर्मलता बनी रहे। आपका स्वास्थ्य भी अच्छा बना रहे। खूब-खूब मंगलकामना है। पूज्यप्रवर ने संदेश का भी वाचन करके साध्वीश्री को प्रदान करवाया।

मुख्य मुनि महावीर कुमार जी ने कहा कि साध्वी चांदकुमारी जी ने चार परम दुर्लभ बातों को प्राप्त किया है। अणगार धर्म की प्राप्ति जीवन की अनमोल धरोहर है। ये बहुत हल्के हैं। ऊनोदरी की साधना करती है। गुरुदेव इन पर वात्सल्य की अमृत वर्षा करवाते हैं। लंबा संयम पर्याय प्राप्त करना भी जीवन की उपलब्धि है। आप अपना संयम पर्याय और निर्मल बनाते रहें, यही मंगलकामना है।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि साध्वी चांदकुमारी जी ने अल्प आयु में ही गुरुदेव तुलसी से संयम प्राप्त कर लिया था। इनकी कंठ कला मधुर है। इनका आना लोगों को आकर्षित करता था। आचार्यप्रवर की भी इन पर कृपादृष्टि है। इनके साथ में साध्वी कानकुमारी जी और साध्वी मानकुमारी जी का भी ८१वें संयम वर्ष का वर्धापन कर रही हूँ। इनका संयम जीवन अध्यात्म में ओत-प्रोत बने। समाधि लीन रहे और हर क्षण आनंद का अनुभव करती रहें।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि गुरु की कृपा जिस शिष्य पर बरसती है, वह शिष्य धन्यता का अनुभव करता है। हमें नंदनवन सा भैक्षव शासन प्राप्त हुआ है। विलक्षण गुरु परंपरा प्राप्त हुई है। साध्वी चांदकुमारी जी को इतनी गुरु कृपा प्राप्त हुई है, यह आपके सौभाग्य की बात है। छोटे जीवन में गुरु चरणों में आना बड़ी बात होती है। पूज्यप्रवर ने भी दो-दो चातुर्मास में आपको साथ रखा है। आपको चित्त समाधि पहुँचाते हैं, सेवा कराते हैं।

साध्वीवृंद ने गीत से उन्हें बधाई दी। साध्वी चांदकुमारी जी ने पूज्यप्रवर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। साध्वी केवलयशा जी ने साध्वीश्री के बारे में उनकी भावना को अभिव्यक्त किया। पारिवारिकजनों ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए।

जैन विश्व भारती के मंत्री सलिल लोढ़ा ने कहा कि जैविभा ने चार दशकों में प्रगति की है। आज एमजी फाउंडेशन कोलकाता द्वारा गंगादेवी सरावगी जैन विद्या पुरस्कार व महादेवलाल सरावगी जैन आगम मनीषा पुरस्कार-२०२१ प्रदान किया जा रहा है। आगम मनीषा पुरस्कार-२०२१ मुंबई की रंजना गोठी एवं गंगादेवी सरावगी जैन विद्या पुरस्कार डॉ० वीरबाला छाजेड़ व सेखानी परिवार द्वारा प्रदत्त जैन सेवा पुरस्कार मूलचंद नाहर को प्रदान किया गया। रंजना गोठी व वीरबाला छाजेड़ ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया। अक्षय तृतीया-२०२३ के अक्षय तृतीया के बैनर व लोगों का अनावरण हुआ।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

कर्मों से मुक्त होकर आत्मा स्वयं परमात्मा में....

(पृष्ठ १६ का शेष)

कर्म के उदय में समता रखेंगे तो कर्म झड़ जाएँगे। आर्तध्यान से तो कर्म का बंध और होगा। शरीर काम करना कम कर दे तो अंत में भी उसका लाभ उठाएँ—संथारा करने की भावना रखें। संथारा तीसरा और अंतिम मनोरथ है। न जीने की इच्छा न मरने की कामना। हम समता भाव रखें, यह काम्य है। पूज्यप्रवर ने कालू यशोविलास का विवेचन करवाया। तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

चाड़वास से छतरसिंह बैद ने कविता से अपने भाव अभिव्यक्त किए। कर्नाटक मलनाड़ की पूज्यप्रवर की यात्रा के संदर्भ में एक पुस्तक 'मलनाड़ में महाश्रमण' मलनाड़वासियों ने पूज्यप्रवर को अर्पित की। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
14 - 20 नवंबर, 2022

✦ *आस्तिक विचारधारा का आधार अध्यात्म है, जबकि नास्तिक विचारधारा भौतिकवाद से संपृक्त है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

मंगलभावना में उमड़ा भावनाओं का ज्वर

व्यक्ति द्वारा ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप के विकास का हो निरंतर प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, ७ नवंबर, २०२२

कार्तिक शुक्ला चतुर्दशी-चातुर्मासिक चतुर्दशी। चातुर्मास संपन्नता की ओर और हाजरी का वाचन भी। साथ में छापरवासियों द्वारा आयोजित पूज्यप्रवर एवं धवल सेना का मंगलभावना समारोह।

शासन सम्राट परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान कराते हुए फरमाया कि 'अर्हत वाङ्मय' में कहा गया है कि आज कार्तिक शुक्ला चतुर्दशी चातुर्मास उतरती चतुर्दशी है। चातुर्मास का अपना महत्त्व होता है। शेष काल का अपना महत्त्व होता है।

शास्त्रकार ने कहा है कि ज्ञान से पदार्थों को, भावों को जाना जा सकता है। ज्ञान का अपना महत्त्व है। ज्ञान अपने आपमें एक पवित्र तत्त्व है। ज्ञेय सभी पदार्थ है। संवर-निर्जरा व पाप-आश्रव भी ज्ञेय है। दर्शन से श्रद्धा करता है। चारित्र के द्वारा वह निग्रह करता है। तप के द्वारा आदमी शुद्धि करता है। ज्ञान परम पवित्र तत्त्व है। ज्ञान पुण्य का हो अथवा पाप का दोनों ही आवश्यक होता है। ज्ञान होता है तो आदमी अपने विवेक के माध्यम से अच्छे ज्ञान को अपने जीवन में उतारता है और बुराईयों का ज्ञान होने के कारण ही उससे अपने आपको बचाने का भी प्रयास करता है। ज्ञान हो, दर्शन का विकास हो तो श्रद्धा भावना पुष्ट होती है, तदनुरूप चारित्र बनता है और तत्पश्चात तपस्या के द्वारा अपना शोधन करता है। इस प्रकार आदमी को ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप के विकास का निरंतर प्रयास करना चाहिए।

ज्ञान के आदान और प्रदान में एक उदाहरण कुमार श्रमण केशी और राजा परदेशी का रखा जा सकता है। कुमार श्रमण केशी विद्वान संत थे तो राजा परदेशी भी जानकार राजा था। राजा

परदेशी नास्तिक विचारधारा वाला पर कुमार श्रमण केशी आस्तिक विचारधारा वाले, दोनों का मिलना हुआ। राजा परदेशी को यथार्थ के आधार पर प्रतिबुद्ध बनाकर नास्तिक से आस्तिक बना दिया था। ज्ञानी पुरुष कठिन को भी आसान बना सकते हैं। दोनों के बीच हुई चर्चा को विस्तार से समझाया।

परमपूज्य आचार्यश्री भिक्षु को भी एक दृष्टि से कुमार श्रमण केशी की तरह देख सकते हैं कि कैसे उन्होंने तर्कों से लोगों को समझाकर श्रावक बनाए थे। हमारे संतों में भी ज्ञान और प्रतिपादन की क्षमता हो। सही बात को यथार्थ से समझाकर गले उतार सके, प्रश्नों का उत्तर बढ़िया दे सके। चातुर्मास और शेष काल में ज्ञान प्रदान करने का प्रयास करें।

चातुर्मास में दो रात्रियाँ शेष रही हैं। कल और परसों अस्वाध्याय काल भी है। सभी चारित्रात्माएँ विहार की तैयारी करें।

पूज्यप्रवर ने हाजरी का वाचन कराते हुए मर्यादाओं को समझाते हुए प्रेरणाएँ प्रदान करवाई। छापर सेवा केंद्र में मुनि आत्मानंद जी के साथ मुनि हेमराज जी को सेवाग्राही के रूप में स्थापित किया है। मुनि पृथ्वीराज जी सेवाकेंद्र के अभी संयोजक हैं।

शासन गौरव साध्वी कल्पलता जी को जैन विश्व भारती में रख रहे हैं। कई वृद्ध साध्वियाँ भी अलग-अलग सेवा केंद्रों में सेवाग्राही के रूप में जा रही हैं। साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी की आज आठवीं मासिक पुण्यतिथि है। साध्वी जिनप्रभा जी, साध्वी सुषमाकुमारी जी व साध्वी विमलप्रज्ञा जी द्रुतगति से मुंबई पधार रही हैं। सभी स्वास्थ्य का अच्छा ध्यान रखें।

गुरुकुलवास के संत भी अलग से विहार कर रहे हैं। मुनि धर्मरुचि जी भी रत्नाधिक हैं, वे भी स्वास्थ्य का ध्यान रखें। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी का चयन हुए भी छह माह पूरे हो रहे हैं। वे भी सहयोग कर रही हैं। साध्वियाँ इनका विशेष ध्यान रखें। साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी भी हैं। आगे यात्रा में अच्छे ढंग से आगे बढ़ें। चारित्रात्माओं द्वारा लेख-पत्र का वाचन किया गया।

मुख्य मुनि महावीर कुमार जी हमारे साथ ही हैं। ये भी खूब अच्छा कार्य करते रहें। परमपूज्य आचार्यश्री भिक्षु का स्मरण करते हुए 'भिक्षु म्हारे प्रगट्याजी भरत खेतर में' गीत के एक पद्य का सुमधुर संगान करवाया।

साध्वीप्रमुखाश्री जी ने कहा कि, कहा जाता है कि भक्त भगवान को पूजा देता है। आचार्य तुलसी के योग से सिरियारी दर्शनीय और पूजनीय बन गई। यही दर्शन छापर में हो रहा है। पूज्यप्रवर ने लोगों के मन में पूज्य कालूगणी के प्रति श्रद्धा पैदा कर दी। पूज्यप्रवर ने ज्ञान प्रदान करके लोगों को तृप्त किया है। यह चातुर्मास आचार्यप्रवर के लिए नए स्वप्न संजोने का समय था। हम सबकी यात्रा मंगलमय हो।

मंगलभावना की अभिव्यक्ति में प्रवास व्यवस्था समिति अध्यक्ष माणकचंद नाहटा, मंत्री नरेंद्र नाहटा, महिला मंडल अध्यक्ष सरिता सुराणा, मंत्री अल्का बैद, प्रेम भंसाली, रेखा राम गोदारा, तारामणी दुधोड़िया, नरपत मालू, झणकार दुधोड़िया, नितेश बैद, सौरभ भूतोड़िया, अणुव्रत महिला टीम, अणुव्रत समिति से प्रदीप, उपासक धनराज मालू ने अपनी-अपनी भावना अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

कर्मों से मुक्त होकर आत्मा स्वयं परमात्मा में होती है अवस्थित : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, २ नवंबर, २०२२

आगम व्याख्याता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने भगवती सूत्र की विवेचना करते हुए फरमाया कि प्रश्न किया गया कि क्या जो वेदना है, वह निर्जरा है, जो निर्जरा है, वह वेदना है? उत्तर दिया गया गौतम! यह उत्तर तर्कसंगत नहीं है। कारण वेदना कर्म की होती है, निर्जरा नो-कर्म की होती है। यह अंतर है।

जैन दर्शन में कर्मवाद का सिद्धांत है। कर्मों से मुक्त होकर आत्मा स्वयं परमात्मा रूप में अवस्थित हो जाती है। अनंत आत्माएँ परमात्मा बन चुकी हैं। हर आत्मा का अस्तित्व अलग-अलग है। जैन दर्शन नियतिवाद को भी कहीं-कहीं इतना मानता है कि पुरुषार्थवाद नगण्य सा हो जाता है। असंभव शब्द का भी अस्तित्व है। भगवान महावीर भी राजा श्रेणिक को नरक जाने से नहीं बचा सके। तीर्थंकर अभव्य को भव्य भी नहीं बना सकते।

कर्मवाद के सिद्धांत में कर्म की अनेक अवस्थाएँ होती हैं। इसमें पहली अवस्था है कर्म का बंध होना और अंतिम अवस्था है, एक संदर्भ में उदय में आना। जब उदय होता है, तब कर्म का वेदन होता है। वेदन कार्य संपन्न हो जाता है, तब वह नो-कर्म होगा और नो-कर्म की निर्जरा होगी। वेदना-निर्जरा अलग है।

(शेष पृष्ठ १५ पर)

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**